VRPF

वनांचल की पाती

वर्ष 18 । जनवरी से मार्च, 2024 । विक्रमी संवत् 2080

संस्कार विशेषांक

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

(वन बंधुओं एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

आत्म-निरीक्षण

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

जीवन में सुख–शांति, समृद्धि, विकास, तथा सुधार के सोपान सतत चढ़ने के लिए आत्मनिरीक्षण प्रत्येक मानव के स्वभाव में अत्यंत जरूरी है। आत्मनिरीक्षण के उपक्रम से मानव के स्वभाव में प्रखरता आती है, सदगुणों की वृद्धि होती है और व्यक्तित्व का विकास होता है। व्यक्तित्व के विकास से ही जीवन महत्वपूर्ण बनता है। जब अपने जीवन के प्रत्येक भाग को ध्यानपूर्वक देखेंगे, तभी यह संभव है। यानी जीवन के प्रत्येक भाग में कहाँ, कौन–सी कमी है, इस पर तत्परतापूर्वक गौर करेंगे, तभी हम अपनी कमियों को दूर कर पाएंगे।

व्यक्ति को अपने दोष नहीं दिखाई देते। कोई व्यक्ति कमियां दिखाए तो उसे ईर्ष्यालु या शत्रु मान लेता है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति आत्म–निरीक्षण नही करता। मनुष्य अपने दोष देखने की जगह दूसरों की कमियां देखने में रस लेते हैं। अधिकांश लोग इसी में अपनी शक्ति एवं समय लगाते हैं। परछिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति उन्हें संसार में कहीं सुंदरता नहीं देखने देती। सृष्टि में गुण हैं तो दोष भी। हर व्यक्ति में किसी–न–किसी मात्रा में ये दोनों हैं। संसार में दुग्ध, फल, मेवा जैसी पोषक चीजें हैं तो जहर जैसे मारक पदार्थ भी। कई बार अधिक खा लेने पर पोषक पदार्थ भी मारक में बदल जाते हैं और कई जहरीली चीजों को औषधि के रूप में प्रयुक्त कर किसी की जान बचाई जा सकती है, पर यह तभी संभव है, जब उपयोग करने वाला उनको विवेकसम्मत ढंग से प्रयोग में लाए।

संसार में शायद ही ऐसा कोई प्रमाण मिले कि किसी व्यक्ति ने दूषित दृष्टिकोण और परनिंदा की वृत्ति को पाले रखकर जीवन में सफलता पाई हो। विश्व का इतिहास इस बात से भरा है कि घोर निंदा, आलोचना और विरोध होने पर भी जिन लोगों ने किसी की निंदा नहीं की और गुणग्राहक वृत्ति में विश्वास बनाए रखा, वे सफल हुए और उन्होंने अपने साथ दूसरों का भी कल्याण किया।

श्रीहरि VRPF

राष्ट्रीय संस्करण

वनांचल की पाती

वर्ष | 18 जनवरी से मार्च, 2024 | विक्रमी संवत् 2080

मार्गदर्शक मण्डल

श्री वीरेन्द्र कुमार, संगठन प्रभारी
श्री मनोज अरोडा, केंद्रीय अध्यक्ष
श्री रविदेव गुप्ता, अध्यक्ष EVFI
श्री वेद बंसल, केंद्रीय उपाध्यक्ष

सम्पादकीय मण्डल

डा. रुकमणी गुप्ता
दिग्विजय गुप्ता
माधव शर्मा

प्रकाशक

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन

Vanvasi Raksha Parivar Foundation
B-4, Housing Society, South Extension Part 1,
New Delhi -110049, India
Ph: +91-11-47980066, +91-11-47011669
Mobile: +91-9667260911
E-mail: vrpfdelhi8@gmail.com
Web : www.vrpf.org.in

कापीराइट @ वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन, सभी अधिकार सुरक्षित

पत्रिका में प्रकाशित लेख और विचारों का अभिप्राय समिति के उद्देश्यों और योजनाओं के प्रति चेतना और जागरुकता पैदा करना है। लेखकों के व्यक्तिगत विचार और चिंतन समिति के चिंतन दर्शन से भिन्न हो सकते हैं। लेख मे दिये गये तथ्यों और आंकड़ों की सटीकता, वैधता और पूर्णता का उत्तरदायित्व लेखकों का रहेगा।

सम्पादक की अनुमति के बिना पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचना आदि के किसी भी अंश का अन्य प्रत्रिकाओं में प्रकाशन अवैधानिक होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक :–
श्री मनोज अरोड़ा, (अध्यक्ष),
वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित
मुद्रकः प्रिन्टेक इन्टरनेशनल,
A-6/D, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली–95 से मुद्रित।
ई–मेल: printechinternational@gmail.com

सम्पादकीय

सनातन संस्कृति के उद्घोषक राष्ट्रनायक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर समस्त पाठकों को बहुत–बहुत बधाई।इस समय जब वनांचल की पाती' का संस्कार विशेषांक आपके हाथों में पंहुचेगा सारा देश क्या सम्पूर्ण विश्व ही राममय होने से सनातन संस्कृति का उद्घोष कर रहा है। इस प्राण प्रतिष्ठा से मानो सनातन संस्कृति का अरूणोदय(पुनर्जागरण) हो गया है। गत 500 वर्षों में हमारी कितनी ही पीढ़िया इस प्रयास में खप गईं। हम परम सौभाग्यशाली हैं जो इस पल के साक्षी बने। श्री राम ने सभी मर्यादाओं का पालन करते हुए वंचित, पिछड़े वनवासी समाज का साथ लिया,दुष्ट राक्षसों का संहार कर उनको सुखी बनाया। उनके राज्य में कोई दुखी, वंचित नहीं था।

हम भाग्यशाली हैं कि हम वनवासी रक्षा परिवार जैसे संगठन से जुड़े हैं जो वंचित वनवासी –नगरीय समाज के सर्वोत्थान में प्रयत्नशील है। इस वंचित समाज में शिक्षा–संस्कार– स्वावलम्बन तभी संभव है जब हम सम्पन्न समाज के बंधु संगठन में कुछ समय के साथ आर्थिक सहयोग में सहभागिता करें जिसे हम **दान** भी कह सकते हैं। इस अंक में बच्चों–युवाओं को संस्कारित करने तथा दान की महत्ता के दिग्दर्शन का प्रयास किया गया है जिससे निकट भविष्य में शिक्षित,संस्कारित,समरस देश के रूप में एक नया भारत खड़ा हो सके।संगठन इस लक्ष्य को लेकर वनवासी क्षेत्रों में विद्यालय एवं कम्प्यूटर केन्द्र निर्माण के साथ पिछड़े वनवासी–नगरीय क्षेत्रों में प्रतिभा विकास केन्द्रों का संचालन कर रहा है जिससे एक समरस समाज की कल्पना साकार हो सके।

इस अंक में विश्व हिन्दु परिषद् के वरिष्ठ श्री मिलिन्द पराण्डे जी, श्री आलोक कुमार जी, श्री बजरंग बागडा जी, संगठन के श्री वीरेन्द्र जी के संस्कार संबंधी उदगारों के साथ वरिष्ठ, दायित्वमान् बंधुओं,सहयोगी दानदाताओं, प्रतिभा विकास केन्द्र की आचार्या बहनों ने संस्कार एवं दान विषयक विभिन्न लेखों द्वारा अपने भावों को अभिव्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा,साध्वी निरंजना के आशीर्वाद के साथ प्रभु श्रीराम का भी आशीर्वाद मिला है। निश्चय ही यह अंक पाठकों के लिये एक संग्रहणीय अंक रहेगा।

नव संवत्सर 2081 के आगमन की अनेकों भाुभकामनाओं के साथ जय जय श्रीराम!

डा0 रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री, केन्द्रीय महिला समिति
मो0 न0 9868222540

शब्दाभिनंदन

देश, समाज के सभी बंधुओं को जय सियाराम! जय श्रीराम। इस पखवाड़े में संगठन ने **'वनाचल'** की पाती का **'संस्कार विशेषांक'** बनाने का निर्णय क्या लिया, मानो ये तो सारा समाज क्या, देश क्या विश्व ही रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर सनातन संस्कृति के जागरण द्वारा संस्कारमय हो गया। मुझे तो इस पल को प्रभु ने साक्षात अनुभव करने का अवसर देकर धन्य कर दिया। मुझे भी आप सब को इस कल्पनातीत शुभ अवसर पर बधाई और शुभकामनाएं देने के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझ रहा। यह तो संयोग ही है कि इस अवसर पर जब यह पत्रिका आप के हाथों में पहुंचेगी, आप सब भी अपनी सनातन संस्कृति के संस्कारों से सरोबार हो रहे होंगे रामलला की झांकियों को अपने हृदय में समाये।

मुझे ऐसी अनुभूति हो रही है कि हमारा यह संगठन एकदम सही दिशा में काम कर रहा है। दिनोंदिन दिल्ली समेत अन्य प्रान्तों में भी प्रतिभा विकास केन्द्रों की संख्या बढ़ने से देश की सीमा के अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचने का प्रयास फलीभूत होता दिख रहा है। अभी 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद की जन्म जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। मा0 नरेन्द्र मोदी जी ने देश की जनसंख्या के 60 प्रतिशत युवाओं को दिग्भ्रमित न होकर स्वामी जी से प्रेरणा लेने का उद्बोधन दिया। आज को ये युवा ही देश का भविष्य है। वनवासी रक्षा परिवार के युवा विभाग इसे युवा दिवस के रूप में प्रभावी ढंग से मनाया, विवेकानंद जी के संदेश से युवको को जोड़ने का संकल्प लिया।

संगठन अब संस्कार परिवार मिलन के अनवरत कार्यक्रमों द्वारा वंचित, पिछड़े नगरीय परिवारों में भी सनातन संस्कारों की अनवरत धारा बहाने के प्रयत्न में संलग्न है। अब जिला स्तर से आगे नगर स्तर पर ये आयोजन हो रहे है। इस राममय

वातावरण में समाज के अधिकांश बंधु बढ़–चढ़ कर भाग ले रहे हैं। निश्चय ही संगठन के कार्यकर्ता एकजुट होकर समाज को अज्ञानरूपी अंधकार से बाहर कर संस्कार शिक्षा, स्वावलम्बन रुपी प्रकाश की और गमन करने में सफल होंगे।

संगठन का वार्षिक केन्द्रीय कार्यक्रम भी 10 फरवरी को आयोजित होगा जब एक बार फिर दिल्ली के 01 लाख परिवारों तक पहुंचने का प्रयास होगा। इस बार प्रसिद्ध कलाकार शेखर सेन **भक्त सूरदास** की एकल प्रस्तुति द्वारा सनातन संस्कृति एवं परम्परा को असीम भक्ति के बिन्दुओं से सरोबार करेंगे। अन्त में, मेरा आप सब से निवेदन है कि पिछड़े वर्ग के परिवारों के उत्थान हेतु अधिकतम परिवारों को संगठन की संस्कार परिवार योजना से जोड़ने का यथाशक्ति प्रयत्न करें जिससे नगरीय सम्पन्न परिवार तो संस्कारित होंगे ही, वे पिछड़े वंचित वर्ग के परिवारों को 'यशस्वी संस्कार परिवार' बनाने में सहयोग कर भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

आपका शुभेच्छु

मनोज अरोड़ा
केन्द्रीय अध्यक्ष
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

शुभकामना संदेश

परमशक्तिपीठ

वात्सल्य ग्राम

दीदी माँ
साध्वी ऋतम्भरा जी
अधिष्ठात्री

दिनांकः 11/01/2024 पत्र क्रमांकः पी.एस.पी./1138/2023-24

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि वन बन्धुओं के उत्थान और समग्र विकास के लिए प्रयत्नशील संस्था 'वनवासी रक्षा परिवार फउंडेशन' द्वारा 'वनांचल की पाती' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आज के युग में जब भौतिक प्रगति आकाश की ऊँचाई और पाताल की गहराई को एकसाथ नाप रही है, तब सुसंस्कारों का रक्षण और संवर्द्धन अति आवश्यक हो जाता है। किसी भी समृद्ध राष्ट्र की पहली शर्त होती है, उसके नागरिकों के सुसंस्कार। इनके बिना समाज और राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं होता। प्राचीन सनातनी जीवन मूल्य हमें सिखाते हैं कि कैसे आकाश को छूते हुए भी धरती पर टिके रहा जा सकता है। अत्याधुनिक तकनीक के इस दौर में जब ये जीवन मूल्य हमारी युवा पीढ़ी के हाथों से फिसल रहे हैं, तब हमारा दायित्व बनता है कि हम उन्हें संभाले रखें।

आपकी संस्था उन वन बन्धुओं के लिए कार्यरत् है, जो अब तक समाज की मुख्यधारा से कटे हुए थे। प्रसन्नता की बात है कि आप सब बंधु-भगिनी उनके उत्थान के लिए सतत प्रयासरत् हैं। विश्वास है कि 'वनांचल की पाती' के संस्कार विशेषांक में ऐसा बहुत कुछ पठनीय होगा, जो समाज को, विशेषकर वनबन्धुओं को दिशा दे सके।

आपके इस सत्प्रयत्न हेतु अनन्त मंगलकामनाओं सहित

साध्वी ऋतम्भरा

(दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा)
परमशक्ति पीठ

मथुरा वृन्दावन मार्ग, पोस्ट-प्रेम नगर, वृन्दावन - 281003, उ. प्र. मोबाइल नंबर : 9999971714, 9999971716
मुख्य कार्यालय- लव-102-103, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली.110092
दूरभाष : 011- 22238751 | E-mail : info@vatsalyagram.org | Web : vatsalyagram.org

शुभकामना संदेश

साध्वी निरंजन ज्योति
SADHVI NIRANJAN JYOTI

सत्यमेव जयते

उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION &
RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि वनबन्धुओं के उत्थान को समर्पित वन रक्षा परिवार फाउंडेशन अपनी स्थापना (वर्ष 2008) से ही शिक्षित, संस्कारित समाज एवं राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रयासरत रहा है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन इस अवसर पर प्रकाशित "वनांचल की पाती" नाम पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। "वनांचल की पाती" नामक पत्रिका एक अत्यंत प्रेरणादायक दस्तावेज है। यह प्रकाशन अपने उद्देश्यों में सफल हो तथा आपके कुशल नेतृत्व एवं प्रगतिपथ पर निरंतर अग्रसर रहने हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया,

(साध्वी निरंजन ज्योति)

कार्यालयः 197, ई विंग, कृषि भवन, डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली–110001
Office: 197, E Wing, Krishi Bhawan, Dr. R.P. Road, New Delhi-110001
दूरभाषः 011–23388823, 23388859 • फैक्सः 011–23388827 • वेब : http://dfpd.gov.in
निवासः बंगला नं. 13, न्यू मोती बाग, नई दिल्ली–110021
Residence: Bunglow No. 13, New Moti Bagh, New Delhi-110021
दूरभाषः 011–24105585 • फैक्सः 011–24103228

शुभकामना संदेश

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD
टेलीफैक्स : 91- 11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : " HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495
Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM , NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

माघ कृ. ६, वि सं २०८०
दि ४/२/२०२४,

शुभकामना संदेश

वनवासी रक्षा परिवार के माध्यम से 'वनांचल की पाती' यह संस्कार विशेषांक अपने कार्य के २५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध हो रहा है, यह अत्यंत आनंद का विषय है।

वनांचलों में रहने वाले अपने समाज बंधुओं को, उनके बालकों को संस्कारित जीवन प्राप्त हो इसलिए वनवासी रक्षा परिवार निरंतर प्रयासरत रहा है। दिल्ली तथा अन्य शहरों में इस पवित्र कार्य के लिए समर्पित हजारों परिवार इन २५ वर्षों में वनवासी रक्षा परिवार के संगठन के माध्यम से खड़े हो गये। संस्कारों से ही मानवता प्रकृति से संस्कृति की ओर प्रवास करती है तथा संस्कारों के अभाव में प्रकृति से विकृती में मानवता का पतन होता है। इसीलिए समाज की धारणा के लिए अपने कार्य का बड़ा महत्व है। वनवासी अंचलों के हजारों बच्चों के जीवन के लिए संस्कारों की एक मजबूत नींव खड़ी करने में अपने प्रयासों का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस पवित्र कार्य में उत्तरोत्तर प्रगती हो, वह प्रभावी बने इन्हीं शुभकामनाओं के साथ सभी कार्यकर्ताओं को मेरा अभिवादन।

!! जय श्रीराम !!

धर्म कार्य में आपका,

(मिलिंद परांडे)
महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद.

शुभकामना संदेश

रमेश जुनेजा
मैनकाईड फार्मा

अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा होना अर्थात् भारत का सच्चे अर्थों में 'सनातन भारत' बनना है। आज अयोध्या ही नहीं, सम्पूर्ण भारत के साथ सम्पूर्ण विश्व राममय हो रहा है अर्थात् सनातन संस्कारों के पुनर्जागरण का समय आ गया है। आधुनिक भौतिकतावादी युग (समय) में इस प्रकार अपनी संस्कृति – संस्कारों से जुड़ने, उसके अनवरत सवर्द्धन, रक्षण की नितांत आवश्यकता दीख रही है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन अब वंचित वनवासी समाज के साथ–साथ पिछड़े नगरीय समाज के बच्चों, परिवारों को भी शिक्षित, संस्कारित करने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। यह काम देश के मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, राजस्थान तथा अन्य प्रांतों में भी बच्चों के लिये संस्कार केन्द्र, प्रतिभा विकास केन्द्रों के संचालन द्वारा गतिमान हो रहा है। इस हेतु इस तिमाही 'वनांचल की पाती' का 'संस्कार विशेषांक' प्रकाशित हो रहा है जो संस्कार–संस्कृति के विभिन्न पहलुओं द्वारा समाज को दिशा देने में सहायक सिद्ध होगा।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन को मेरी शुभकामनांए !

परमपूजनीय सरसंघ चालक मा० मोहन भागवत जी का श्री रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव पर उद्बोधन

आदरणीय प्रधानमंत्री जी, उत्तर प्रदेश के आदरणीय मुख्यमंत्री जी, आदरणीय राज्यपाल महोदया, देश के आज विद्यमान सभी पंथ–संप्रदायों के प्रतिनिधित्व करने वाले हमारे संत, ऋषि, आचार्यगण और समाज के सब स्तरों का प्रतिनिधित्व करने वाले निमंत्रित महानुभाव। आज का आनंद शब्दों में वर्णनातीत है और उसके वर्णन करने का प्रयास इसके पहले के वक्तव्य में अच्छा हो गया है । यह भी बता दिया गया है और हम जानते भी हैं कि आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का स्व लौट के आया है और संपूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा, इसका प्रतीक आज का कार्यक्रम बन गया है। ऐसे समय में आपके उत्साह का, आपके आनंद का वर्णन कोई नहीं कर सकता, हम यहां पर अनुभव कर रहे हैं। पूर्ण देश में यही वातावरण है, छोटे–छोटे मंदिरों के सामने दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को सुनने वाले हमारे समाज के करोड़ों बंधु, वहां पहुंच ना पाए ऐसे घर–घर के हमारे नागरिक–सज्जन, माता–भगिनी सब भाव विभोर हैं, सब में आनंद है, सब में उत्साह है और ऐसे समय में जोश की बातों में थोड़ी सी होश की बात करने का काम मुझे ही दिया जाता है। आज हमने सुना कि इस प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने के पूर्व प्रधानमंत्री जी ने कठोर व्रत रखा। जितना कठोर व्रत रखने को कहा था, उससे कई गुना अधिक कठोर व्रताचरण उन्होंने किया। मेरा पुराना उनसे परिचय है मैं जानता हूं कि वो तपस्वी हैं ही । परंतु, वह अकेले तप कर रहे हैं, हम क्या करेंगे ? अयोध्या में रामलाल आए, अयोध्या से बाहर क्यों गए थे ? रामायण में क्यों गए थे बाहर ? तो अयोध्या में कलह हुआ। अयोध्या उस पुरी का नाम है, जिसमें कोई द्वंद्व नहीं, जिसमें कोई कलह नहीं, जिसमें कोई दुविधा नहीं, वह हुआ। 14 वर्ष वनवास में गए वह सब ठीक होने के बाद दुनिया के कलह को मिटा के वापस आए। आज रामलला वापस फिर से आए हैं, 500 साल के बाद। जिनके त्याग तपस्या प्रयासों से यह सोने का दिन आज हम देख रहे हैं । स्वर्ण दिवस देख रहे हैं। उनका स्मरण प्राण प्रतिष्ठा के संकल्प में हम लोगों ने कहा, आपने सुना होगा। स्मरण किया। उनकी तपस्या को, उनके त्याग को, उनके परिश्रम को, शत बार, सहस्त्र बार, कोटि बार नमन है। रामलला के यहां इस युग में आज के दिन फिर वापस आने का इतिहास, जो जो श्रवण करेगा वह राष्ट्र के लिए कर्मप्रवण होगा और उसके राष्ट्र का सब दुख दैन्य हरण होगा ऐसे इस इतिहास का सामर्थ्य है। परंतु, उसमें हमारे लिए कर्तव्य का आदेश भी है प्रधानमंत्री जी ने तप किया अब हमको भी तप करना है राम राज्य आने वाला है वह कैसा था।

दैहिक–दैविक–भौतिक तापा,रामराज नहीं कहहूं व्यापा।
सब नर करहीं परस्पर प्रीति, चलहीं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।
सब निर्दम्भ धर्मरत पुनि, नर अरू नारी चतुर सब गुणी।
सब गुणज्ञ पंडित सब ज्ञानी, सब कृतघ्न हीं कपट सयानी।

राम राज्य के सामान्य नागरिकों का जो वर्णन है हम भी इस गौरवमय भारतवर्ष की संताने हैं, कोटि–कोटि कंठ उसका जयगाण करने वाले हमारे हैं हमको इस प्रकार के व्यवहार को रखने का सब आचरण करना पड़ेगा। हमको भी सारे कलह को विदाई देनी पड़ेगी छोटे–छोटे परस्पर मत रहते हैं छोटे–छोटे विवाद रहते हैं उसको लेकर लड़ाई करने की आदत छोड़नी पड़ेगी। आखिर है क्या, यह बात बताई वह सामान्य नागरिक कैसे थे, निर्दम्भ प्रमाणिकता से आचरण करने वाले, केवल बातें करने वाले ही नहीं और बातें करके उसका अहंकार

पालने वाले नहीं थे, काम करते थे, आचरण करते थे और अहंकार नहीं था ऐसे वो थे और धर्मरत थे। यानी क्या थे? इस पर कठिन भाषा में प्रवचन बहुत लंबा हो सकता है लेकिन थोड़े में धर्म के जो चार मूल्य, जिनकी चौखट पर धर्म है, ऐसा श्रीमद् भागवत गीता में बताया है – सत्य, करूणा, शुचिता, तपस। उसका आज हमारे लिए युगानुकुल आचरण क्या है तो सत्य कहता है कि सब घटों में राम है, ब्रह्म सत्य है, वही सर्वत्र है तो हमको यह जानकर आपस में समन्वय से चलना होगा। क्योंकि हम चलते हैं, सबके लिए चलते हैं, सब हमारे हैं, इसलिए हम चल पाते हैं और इसीलिए आपस में समन्वय रखकर व्यवहार करना यह धर्म का पहला जो मूल्य है सत्य, उसका आचरण है करुणा दूसरा कदम है उसका आचरण है सेवा और परोपकार/सरकार की कई योजनाएं गरीबों को राहत दे रही है, सब हो रहा है, लेकिन हमारा भी कर्तव्य है, यह सब समाजवाले हमारे अपने बंधु हैं तो जहां हमको दुख दिखता है पीड़ा दिखती है वहां हम दौड़ जाए, सेवा करें दोनों हाथों से कमायें अपने लिए न्यूनतम आवश्यक रख कर बाकी सारा वापस दें सेवा और परोपकार के माध्यम से यह करुणा का अर्थ आज है। सुचिता पर चलना है यानी पवित्रता होनी चाहिए पवित्रता के लिए संयम चाहिए। अपने को रोकना है सब अपनी इच्छाएं सब अपने मत सब अपनी बातें ठीक होगीं ही ऐसा नहीं है, और होगीं तो अन्यों का भी मत है अन्यों की भी इच्छाएं हैं और इसलिए अपने आप को संयम में रखते हैं तो सारी पृथ्वी सब मानवों को जीवित रखेगी। गांधी जी कहते थे – "Earth has enough for everyone's need but it cannot satisfy everyone's greed"- तो लोभ नहीं करना, संयम में रहना और अनुशासन का पालन करना। अपने जीवन में अनुशासित रहना, अपने कुटुंब में अनुशासित रहना, अपने समाज में अनुशासित रहना, सामाजिक जीवन में नागरिक अनुशासन का पालन करना। भगिनी निवेदिता कहती थी कि स्वतंत्र देश में नागरिक संवेदना रखना और नागरिक अनुशासन का पालन करना–यही देशभक्ति का रूप है। इससे जीवन में पवित्रता आती है और तपस का तो मूर्तिमान उदाहरण आज आपके सामने दिया गया। व्यक्तिगत तपस तो हम करेंगे, सामूहिक तपस क्या है– **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् संघ अक्षत्वम् सम् वद्दवं सम्वो मनावसि जानताम।** हम साथ चलेंगे, बोलेंगे आपस में उसमें से सहमति का संवाद निकालेंगे एक ही भाषा बोलेंगे वह वाणी मन वचन कर्म समन्वित होगा और मिलकर चलेंगे अपने देश को विश्व गुरु बनाएंगे यह तपस हम सबको करना है 500 वर्षों तक अनेक पीढियों ने लगकर परिश्रम करके प्राणों का बलिदान देकर खून पसीना बहा कर आज यह आनंद का दिन सारे राष्ट्र को उपलब्ध करा दिया उन सब के प्रति हमारे मन में कृतज्ञता है मैं यहां बैठता हूं तो मेरे मन में विचार आता है कि मुझे बिठाया मैंने क्या किया वह तो जो उन्होंने किया उसका प्रतिनिधि भी मुझे बनाया गया है उस प्रतिनिधि के नाते मैं ये अवदान स्वीकार करता हूं और उन्हीं को अर्पण करता हूं परंतु उनका यह व्रत हमको आगे लेकर जाना है जिस धर्म स्थापना विश्व में करने के लिए राम का अवतार हुआ था उस धर्म स्थापना को अनुकूल स्थिति अपने आचरण में अपने देश में उत्पन्न करना यह अपना कर्तव्य बनता है रामलला आए हैं हमारे मन को अल्हादित करने के लिए, उत्साहित करने के लिए प्रेरणा देने के लिए साथ–साथ इस कर्तव्य की याद दिलाकर उसमें कृति प्रवण करने के लिए आए हैं उनका आदेश सर पर लेकर हम यहां से जाएं सब लोग तो यहां आ नहीं सके लेकिन वह सुन रहे हैं देख रहे हैं अभी इसी क्षण से इस व्रत का पालन हम करेंगे तो मंदिर–निर्माण पूरा होते–होते विश्व गुरु भारत का निर्माण भी पूरा हो जाएगा। इतनी क्षमता हम सबकी है इसका मैं एक बार स्मरण देता हूं, आप सबको धन्यवाद देता हूं, और मेरे चार शब्द समाप्त करता हूं ।

कर्म का सिद्धांत

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

ऊर्जा के सिद्धांत के अनुसार एक बार उत्पन्न ऊर्जा को नष्ट नहीं किया जा सकता है। ठीक ऐसे ही कर्म का सिद्धांत भी कार्य करता है। एक बार किया गया कर्म बिना फल दिए कभी नष्ट नहीं होता है। यही कारण है कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह समझाया, ''आप अपना कर्म करें। कर्म के अनुसार फल का मिलना तय है, इसकी चिंता न करें''। **कर्मण्येनाधिकारस्ते.......**

हमारे जीवन में कई बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं जब हम संशय में पड़ जाते हैं कि अमुक कार्य किया जाना उचित है या नहीं? क्या इसे करते हुए हमारा समय व्यर्थ जा रहा है? क्या किया गया प्रयास या कर्म हमारे लिए व्यर्थ हो गया? हमारे मन में बहुत तरह की नकारात्मक बातें आने लगती हैं। हमें लगता है कि हमारा समय यूं ही व्यर्थ चला गया। हमने जीवन के उस अंश को बेकार कर दिया। जबकि ऐसा नहीं है। इसे सरल शब्दों में कहा जाए तो अगर आपने कोई कर्म किया है तो उसका फल आपको निश्चित मिलेगा। ऐसा संभव है कि हमें त्वरित फल न दिखे, लेकिन उसका प्रभाव जीवन के किसी दूसरे हिस्से में किसी अन्य तरीके से, आपके व्यवहार में अच्छे–बुरे कर्म के अनुसार, आपके जीवन में शामिल हो जाएगा। आपका कोई प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता है। वह बदले में कुछ अच्छे संबंध, कुछ अच्छी सीख या कोई अच्छा विचार दे जाता है।

कर्म भी दो तरीके का होता है–एक पुण्य, दूसरा पाप। यही कारण है कि अपने कर्म के प्रति जागरूक होने की बात पर बल दिया जाता है। पाप हो या पुण्य, जीवन की किसी न किसी परिस्थिति में उस कार्य का फल किसी न किसी रूप में आपके पास लौट कर आना तय है, और तब शोक या प्रसन्नता के साथ उसे स्वीकार करना ही पड़ता है।

इस लिये व्यक्ति को सत्कर्म करते रहना चाहिए, समाज सेवा ही सबसे वड़ा सत्कर्म है। तुलसीदास ने कहा, 'परहित सरि धर्म नही भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमायी।' संस्कार परिवार योजना इसी विचार पर आधारित है। परिवार के साथ नित्य मंत्रों के उच्चारण, आसन–प्राणायाम के साथ भजन, चिन्तन करते रहें। इस कार्य के लिये पड़ोसी, सम्बन्धी, समाज को प्रेरित करते रहें। आपके साथ सबका कल्याण होगा!

राष्ट्र जीवन में संस्कार का महत्व

बजरंगलाल बागड़ा
सयुक्त महामंत्री
विश्व हिन्दू परिषद्

विश्व के इतिहास में अनेक सभ्यताओं/संस्कृतियों का उद्भव और विकास हुआ और कालांतर में उनमें से अधिकतर नष्ट हो गईं। इनमें अधिकतर सभ्यताएं सामाजिक, वैज्ञानिक, सामरिक, दार्शनिक और राजनैतिक दृष्टि से बड़ी उन्नत और अग्रणी थीं। अनेक ऐसी सभ्यताओं के भवनों के भग्नावशेष और दर्शन के अवशेष विश्व भर में फैले हुए हैं। इनके बावजूद उनका अस्तित्व समाप्त हो गया। इसके अनेक कारण रहे होंगे, जैसे प्राकृतिक, भौगोलिक, दैवीय आदि। परन्तु ज्ञात इतिहास में अनेक विकसित सभ्यताएं नवोदित सामरिक व पाशविक शक्तियों के दुर्दमन द्वारा कुचली गयीं हैं, जैसे यूनान, रोम, मिस्त्र, मेसोपोटामिया, बेबीलोनिया, फारस आदि। भारत की सनातन वैदिक संस्कृति यद्यपि समाप्त नहीं हुई परन्तु इन्हीं दुर्दांत आततायी शक्तियों का शिकार बनी और इसने एक हजार वर्ष तक राजनीतिक दासता का दंश भोगा, और इसके फलस्वरूप व्याप्त अनेक विकृतियों से अभी भी जूझ रही है।

अपने से बहुत कम विकसित, छोटी, कमजोर और क्षीण दार्शनिक धरातल वाली शक्तियों के हाथों मिट जाने वाली इन सभ्यताओं का इतिहास बड़ा लम्बा और समृद्ध रहा था। फिर भी उनकी इस अधोगति का मुख्य कारण इनके नागरिकों में सामूहिक चेतना और दायित्व का स्थान समय के साथ व्यक्तिगत महत्वांकाक्षा और अहंकार द्वारा प्रतिस्थानापन्न होना रहा है। व्यक्तियों से समाज और राष्ट्र बनता है और इसकी मूल इकाई 'व्यक्ति' में विकार आना राष्ट्र के पतन का संकेत है। ये विकार संस्कारहीनता का ही परिणाम होते हैं। अतएव व्यक्तियों में अच्छे संस्कार ही समाज, राष्ट्र की निरन्तरता, विकास और वैभव के आधार होते हैं।

भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में निम्न चार प्रश्नों के उत्तर से संस्कारों का महत्व उजागर हो जाता है:–

1. सबसे बड़ा विद्वान् कौन ?
2. सबसे बड़ा वीर कौन ?
3. सबसे बड़ा ईश्वर भक्त कौन?
4. सबसे बड़ा खलनायक कौन?

प्रारंभ के तीन प्रश्न अच्छे गुणों के परिचायक हैं जबकि चौथा प्रश्न दुर्गुणों का परिणाम है। अतः इनके उत्तर एक न होकर विरोधात्मक होना चाहिए। पर वास्तव में इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर है: रावण। अब प्रश्न उठता है कि जो शीर्ष स्तर का सर्वज्ञानी है, उच्च कुल में जन्मा है, शूरवीर है एवं ईश्वर का अनन्य भक्त है, वह ऐसा खलनायक कैसे हो सकता है जिसे प्रति वर्ष हिंदू समाज जलाता रहा है और फिर भी नष्ट नहीं होता। अनेक उत्कृष्ट गुणों के बावजूद रावण की संस्कारहीनता, विशेषकर उसका अहंकार और परोपकार व सर्व कल्याण की भावना का नितांत अभाव उसके पतन का कारण बनी। उसके ज्ञान, शौर्य और भक्ति के सारे पुण्य एक संस्कारों के अभाव ने नष्ट कर दिए। यह भारतीय शास्त्रों का मत रहा है कि बिना श्रेष्ठ आचरण के किसी भी स्तर के ज्ञान,

विद्वत्ता, वीरता, व्यक्तिगत भक्ति और साधना का कोई महत्व नहीं। रावण से अधिक अच्छा इसका और कोई सरलता से ग्राह्य उदाहरण नहीं हो सकता।

संस्कारों में भी व्यक्तिगत आचरण की शुचिता के साथ–साथ सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों की पूर्ति की ललक एक उत्कृष्ट संस्कार है। विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के समय भारत में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं था कि वह पराजय की पीड़ा झेले। परन्तु क्षेत्रीय राजाओं और क्षत्रपों का अहंकार उन्हें एक जुट होकर आक्रमण का प्रतिकार करने से वंचित करता रहा। इन शासकों द्वारा वृहद राष्ट्रीय महत्व को अपने अहंकार के नीचे दबाते रहना हजार वर्षों की दासता और भारतीय सभ्यता, दर्शन, आर्थिक विकास और सांस्कृतिक हानि का कारण बना। संस्कारों की विहीनता यहाँ तक पहुंची कि अनेक भारतीय शासक विदेशी आक्रांताओं के दास बन कर अपनी क्षमताओं का उपयोग शेष स्वतंत्र भारतीय राज्यों से युद्ध करने और उन्हें हरा कर विदेशियों को उपहार में देते रहे। पीढ़ियों तक, भारत जैसे उन्नत दर्शन और परम्परा वाले राष्ट्र में ऐसे भी राज्य या शासक होंगे, ऐसी कल्पना भी कठिन है। परन्तु यह सब हुआ और यही कटु पीड़ा दायक सत्य इतिहास का अंश है। अतएव संस्कार केवल व्यक्तिगत आचरण की दृष्टि से ही नहीं, सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से भी बड़े महत्व रखते हैं।

संस्कारों की स्थापना बचपन में अधिक सुगमता और सरलता से होती है जो जीवनपर्यंत टिके रहते हैं। अधिक आयु में नए संस्कारों को ग्रहण करना असंभव तो नहीं, अपेक्षाकृत अधिक कठिन होता है। राष्ट्र और परिवार में चारों ओर दासता का ग्रहण लगने के बावजूद जीजामाता का बालक शिवा को अपने सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्वों के संस्कारों से ओत–प्रोत कर हिन्दवी साम्राज्य की नीवं रखने में सक्षम बनाना इसका सटीक उदाहरण है। विदेशी दासता के काल–खंड में भी प्रत्येक दशक में भारत के किसी न किसी भाग में स्वतंत्रता के संघर्ष निरंतर जारी रहे, जो उन समाजों में अपने संस्कारों की परम्परा को बनाये रखने की ईच्छा–शक्ति का परिचायक है, जैसे मेवाड़ राज्य ने कुछ वर्षों के लिए पराजय स्वीकार की, परन्तु दासता नहीं।

इन सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रों, सभ्यताओं और संस्कृतियों का दार्शनिक, आर्थिक, सामरिक और राजनैतिक विकास करना ही पर्याप्त नहीं है। अपितु ऐसे विकास को बनाये रखने के लिए समाज के नागरिकों में अपने सामाजिक, सामूहिक और राष्ट्रीय दायित्वों का बोध और उनकी पूर्ति के लिए आवश्यक त्याग, समर्पण, क्षमता आदि के गुण समाहित करना कोई विकल्प नहीं,एक अनिवार्यता है।

अर्वाचीन काल में अनेक संगठन संस्कार निर्माण की दिशा में महती कार्य कर रहे हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन भी एक ऐसी ही संस्था है जो इस पुण्य कार्य में लगी हुई है और राष्ट्र की संस्कृति और इसके विकास को स्थायित्व प्रदान करने में अपना गिलहरी का सा योगदान कर रही है। भारत पिछले एक दशक से तीव्र विकास के पथ पर अग्रसर है परन्तु इस विकास को सही दिशा देने और अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए भारतीय नागरिकों में अपने राष्ट्रीय दायित्व का बोध और क्षमता के संस्कारों की स्थापना एक महती आवश्यकता है।

सनातन धर्म ही हिन्दू राष्ट्र है : सनातन है तो मुमकिन है !

पायल कनोड़िआ
अध्यक्ष एवं ट्रस्टी
M3M फाउंडेशन

भारत के सूत्रधार एवं यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सनातन के विषय में कहा है कि 'सनातन संस्कृति संत रविदास का प्रतिबिंब है, माता शबरी की पहचान है, महर्षि वालमीकि का आधार है और सनातन ने ही भारतवर्ष को जोड़ा हुआ हैं।''

यह सनातन ही है जिसने न केवल भारत को बल्कि पूरे विश्व की मानवजाति को एक विश्वास की डोरी से बांधा हुआ है। अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष स्वामी चक्रपाणि ने भी कहा है कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सनातन धर्म के प्रतीक हैं।

सनातन धर्म को हिन्दू धर्म, वैदिक धर्म एवं सबसे प्राचीनतम धर्म के नाम से भी जाना जाता है। भारत की सिंधु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिह्न मिलते हैं। यह धर्म, ज्ञात रूप से लगभग 12000 वर्ष पुराना है जबकि कुछ पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हिंदू धर्म 90 हजार वर्ष पुराना है।

सनातन धर्म में चार युगों का वर्णन किया गया है। ये क्रमशः सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग हैं। वर्तमान समय में कलयुग चल रहा है। विद्वानों की माने तो इस युग के समापन के पश्चात सतयुग प्रारंभ होगा। ये क्रम अनवरत जारी रहेगा।

सनातन शब्द श्सत्श और श्तत्श शब्दों से मिलकर बना है। दोनों शब्दों का अर्थ 'यह' और श्वहश है। 'अहम् ब्रह्मास्मि' और 'तत्त्वमसि' सूत्र में इसका व्यापक उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में 'अहं ब्रह्मास्मि' का उल्लेख है – 'मैं ब्रह्मा हूं' सामवेद में श्तत्त्वमसि का उल्लेख है – 'वह ब्रह्म आप हैं' अथर्ववेद में उल्लेख है– 'अयं आत्मा ब्रह्म'–यह आत्मा ही ब्रह्म है। ऋग्वेद में प्रज्ञानम् ब्रह्म का उल्लेख है 'वह प्रज्ञानम् ही ब्रह्म है सामवेद में यह भी कहा गया है कि श्सर्वम खल्विदं ब्रह्मश – 'सभी ब्रह्म हैं।

सनातन धर्म में त्रिदेव – ब्रह्मा, विष्णु और महेश को प्रमुख आराध्य माना गया है। भगवान शिव के बारे में कहा जाता है कि अरण्य संस्कृति में भी उनकी पूजा की जाती थी। यह वह समय था। जब मानव सभ्यता का विकास नहीं हो पाया था। कालांतर में अरण्य संस्कृति ही आगे चलकर सनातन यानी जीने का आधार बनी। उस समय से भगवान शिव को सनातन का आधार माना गया है।

सनातन में को प्रतीक चिह्न माना जाता है। इस धर्म में शिव–शक्ति, ब्रह्म और विष्णु को समान माना गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी संप्रदाय के लोग सनातन को मानते हैं।

गीता में भी सनातन धर्म का वर्णन मिलता है। श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैंरू

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ।।

अर्थात– हे अर्जुन! जो छेदा नहीं जाता। जलाया नहीं जाता। जो सूखता नहीं। जो गीला नहीं

होता। जो स्थान नहीं बदलता। ऐसे रहस्यमय व सात्विक गुण तो केवल परमात्मा में ही होते हैं। जो सत्ता इन दैवीय गुणों से परिपूर्ण हो, वही सनातन कहलाने के योग्य है। इस श्लोक के माध्यम से भगवान कृष्ण कहते हैं कि जो न तो कभी नया रहा। न ही कभी पुराना होगा। न ही इसकी शुरुआत है। न ही इसका अंत है। अर्थात ईश्वर को ही सनातन कहा गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख आदरणीय श्री मोहन भागवत जी ने कहा है कि षजिसे लोग धर्म कहते हैं, वह सबका एक ही है। श्री मोहन भागवत जी ने धर्म को मानव धर्म बताया है। उनका कहना है ष्यह जरूरी है कि समाज विविधताओं को संभालते हुए एकजुट होकर चले और मिलकर समस्याओं का हल निकाले। हम सब विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बावजूद एक सनातन प्रवाह में चल रहे हैं। सबकी पूजा का सम्मान करना ही हिन्दू धर्म है और अपने खान पान और दूसरों के खानपान का भी सम्मान करना हिन्दू धर्म सिखाता है। हम अपनी पूजा पद्धति पर अडिग रहें और दूसरों की भी पूजा पद्धति का सम्मान करें। मानवता का धर्म ही सनातन है।

सनातन ने ही हमारे परिवारों को शिष्टाचार कि मजबूत डोर से बांधा हुआ है। बड़ों के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लेना सनातन ने ही सिखाया है। **यही सनातन एक संस्कार है।** चरणस्पर्श करने वाला व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा को अलग रख कर यह सम्मान अपने से बड़ों को देता है जिससे उसके व्यक्तित्व का पता चलता है। इसलिए कहा गया है सनातन है तो मुमकिन है।

सनातन ने ही 'व्रत' और 'उपवास' द्वारा संकल्प लेना सिखाया है। किसी भी शुभ कार्य, जैसे पूजा–पाठ से लेकर नए घर में प्रवेश करने तक में स्वास्तिक बनाने की मान्यता हमें सनातन से ही मिली है।

स्वास्तिक शब्द सु+अस+क शब्दों से मिलकर बना है। जिसमें 'सु' का अर्थ मंगल या 'शुभ, 'अस' का अर्थ 'सत्ता' या 'अस्तित्व' और 'क' का अर्थ 'कर्ता' या करने वाले से है। जिससे स्वस्तिक का अर्थ हुआ मंगल या शुभ कार्य करने वाला। स्वस्तिक को भगवान गणेश जी का प्रतीक माना गया है, इसलिए गणेश पूजन के साथ–साथ स्वास्तिक का निर्माण किया जाता हैं। स्वस्तिक को चार युग, जीवन के चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का प्रतीक भी माना गया है। स्वस्तिक में जो 4 बिन्दु होते हैं, उनमें गौरी, पृथ्वी, कच्छप और अनंत देवताओं का वास होता है। यह ज्ञान हमें सनातन ने ही दिया है इसलिए कहा गया है – सनातन है तो मुमकिन है।

माथे पर तिलक लगाना भी हमने सनातन से सीखा है।

स्नानं दानं तपो होमो देवता पितृकर्म च ।
तत्सर्व निष्फलं याति ललाटे तिलकं विना ।।

(अर्थात स्नान, दान, तप, होम तथा देव व पितृ कर्म करते समय यदि तिलक न लगाया गया हो तो ये सब कार्य निष्फल हो जाते हैं)

कुछ तो कारण होगा जो लाखों वर्षों से ऋषि–मुनि और देवी देवता अपने ललाट पर तिलक लगाते आ रहे हैं। माना जाता है कि मनुष्य के मस्तक के मध्य में विष्णु भगवान का निवास होता है, और

तिलक ठीक इसी स्थान पर लगाया जाता है। और उसी में से एक ज्ञान से उभरा विज्ञान अपने ललाट पर तिलक लगाने का । इसलिए कहा गया है— सनातन है तो मुमकिन है।

हाथ पर कलावा बांधने की परंपरा और मान्यता भी हमें सनातन से ही मिली है। कलावा को हाथ में बांधने से त्रिदेव यानी ब्रह्मा, विष्णु और महेश का आशीर्वाद और देवी सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती की अनुकूलता बनी रहती है। ये धागा कलाई की नसों से ऊर्जा, पूरे शरीर में फैलाने में मदद करता है और शरीर हमेशा ऊर्जावान बना रहता है।

सनातन की उत्पत्ति को खोजेंगे तो लगभग 1,96,08,53,120 वर्ष पूर्व जाना होगा। करोड़ों वर्ष पुराना है 'नमस्ते', 'नमस्कार' एवं 'नमस्कारम' का इतिहास! 'नमस्ते' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है – Namah (नमः). te (ते) का संस्कृत में अर्थ है आपको नमन। यह पूरा शब्द श्नमस्तेश नमः और ते का संयुक्त रूप है।

नमस्कार शब्द भी संस्कृत भाषा का है। इसका संधि विच्छेद किया जाए तो यह दो शब्दों से मिलकर बना है। नमः और कार। नमः का अर्थ है नमन करना और कार का अर्थ है आपके द्वारा दिए गए नमन का आशीर्वाद मिलने के रूप में पूर्ण होना। यह भी सनातन ने ही सिखाया है।

गरुड़ पुराण में 56 बार, देवी भागवत पुराण में 66 बार, ब्रह्माण्ड पुराण में 95 बार, कूर्म पुराण में 99 बार, शिव पुराण में 148 बार अभिवादन के रूप में 'नमस्ते' का ही प्रयोग किया गया है। वैदिक काल अर्थात् करोड़ों वर्ष से ऋषि—मुनि व समस्त आर्य नर—नारी अभिवादन के लिए हाथ जोड़कर श्नमस्तेश करने की रीति को अपनाये हुए थे। वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों एवं पुराण आदि में भी 'नमस्ते' का ही उल्लेख मिलता है।

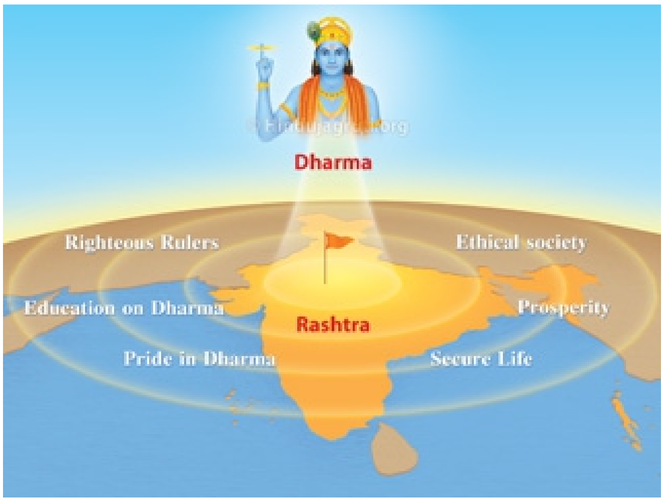

सनातन को जानने के लिए वर्षों लग जाएंगे, परन्तु अगर सत्य की राह पर चलोगे तो सनातन में रम जाओगे। सनातन का एक अर्थ सरलता भी है और एक अर्थ ईश्वर के प्रति विश्वास भी ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सनातन को एक ब्रह्म रूप में स्वीकार किया है, जिसमें सभी धर्म, जाति और विचार के लोगों को एक ही पैमाने पर स्थान दिया जाता है और वो है

जीवन को सार्थक और एक उद्देश्य के साथ जोड़ कर आगे बढ़ने का संकल्प । सनातन में भी राष्ट्र सर्वोपरि था, है, और हमेशा रहेगा ।

सनातन ने ही भारतवर्ष को एक मजबूत राष्ट्र का सम्मान दिया है ।

सच है – सनातन है तो मुमकिन है !

जय हिन्द, जय भारत ।

परिवार प्रबोधन जन से वन तक

विवेक नागपाल
रोज मेरता

हम सभी सुनते आए हैं मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और परिवार इस समाज की प्रथम ईकाई है। आधुनिकता बोध में बढ़ती भौतिकता की मनोविकार सीमा अब अपने परम लक्ष्य पर है। संस्कारों के अभाव में संक्रमण का यह दौर काल के मुंह में हमें अग्रसर कर रहा है। बातें अत्यंत छोटी हैं किंतु जीवन शैली में इनका प्रभाव मृत्यु पर अमृत जैसा है।

- छोटा परिवार सुखी होने का सार नहीं है, खाने को तो हमारा कुटुंब कम हुआ है। पर आप हमें नींद भी कम आने लगी है, और हमारे सगे–संबंधी भी कम हो चुके हैं।
- पराकाष्ठा की सभी सीमाएं अंतिम परिणीति पर पहुंच चुकी है। सिर में बाल क्या कम हुए प्रेम कम हो गया, लज्जा कम हो गई ,मर्यादा तो भी शेष नहीं और बच्चे भी क्रमशः कम ही हो गए।
- घर का भोजन दुर्लभ हो गया, पुस्तकवाचन विलुप्त प्राय है, राम लक्ष्मण का प्रेम अब नहीं बचा साथ–साथ खेलना–खाना–घूमना सब कम ही हुआ है।
- चांदी–तांबे के बर्तन क्या कम हुए हमारा सुख चौन ही कम हो गया ।मेहमानों का घर में आना बन्द सा हो गया है
- सत्य–सभ्यता–मनविलाप–समर्पण सब धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं ध्यान रखना चाहिए कि इनका संतुलन ही मानव जीवन का सार है।
- अभिभावकों को चाहिए संतान को दोष न देकर स्वयं के प्रति सतर्क हो जाएं।

इंग्लिश मिशनरी वाली स्कूल संस्कार नहीं देते वह तो प्राय परिवार से ही प्राप्त होते हैं ।बच्चा तो स्कूल से बर्थडे,एनिवर्सरी,न्यू ईयर यह सीख कर आता है। मम्मीऋ डैडी शब्दों को अच्छा मानना। शुभ प्रेरक प्रसंग को छोड़ देना क्या यही परिवार प्रबोधन है!

भविष्य में वही बच्चा भावनाओं से खिलवाड़ करता है। संवेदनाओं के प्रति उसका कोई मोह नहीं है।अंग्रेजी जुबा उसे आपको विमुख करके ही मानती है।

संस्कारों का प्रभाव जीवन पर्यंत रहता है भारतीय संस्कृति में इसीलिए १६ संस्कारों को अति विशिष्ट स्थान दिया गया है। स्वच्छ मस्तिष्क में ही स्वच्छ मन(विचार) विचरण करेगा।

माता प्रथम गुरु होकर मंत्र से मंदिर तक प्रवेश कराती है, यही जीवन की प्रदीक्षा है।

यद्यपि काल के प्रवाह में नाटकीय विधि से इंग्लिश बोलना हाय से बाय तक की यात्रा करना यह किंचित सुख देता है।

‘प्रणाम से आशीर्वाद की यात्रा जीवन को आनंद और इस्फूर्त से पूर्ण चेतना की ओर प्रवृत्त करती है।

- बड़ों का आशीर्वाद, इष्ट देव से प्रार्थना,परीक्षा में अपनों का सानिध्य हमें सफलता की ओर ले जाता है। तदुपरांत संपूर्ण परिवार खुशहाली की ओर अग्रसर होता है। विपरीत क्रम में होटल में पार्टी बनाने की रीति, हनीमून के लिए फारेन पैकेज, पश्चिमी सभ्यता को जाने अनजाने में स्वीकार करना हमें पतन की ओर ले जाएगा।

नई भाषा सीखना बोलना श्रेयस्कर है किंतु उसकी संस्कृति को अपनाना हमारे लिए निश्चित ही विनाश की स्थिति है।

सारांश यही है– ‘‘जीवन चलने का नाम, चलते यह रहो सुबहो शाम।’’ हमारे संस्कार एवं संस्कृति विलुप्त हुई तो हम काल के मुंह में शीघ्रता से समझ जाएंगे, यह अत्यंत घातक स्थिति है, हमें सचेत होना पड़ेगा। दृष्टि विचार से हम अपने परिवार समाज और संस्कृति को सुरक्षित रख पाएंगे।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रभाषा का गौरव, संस्कृति और संस्कार की प्रति बच्चों की सजगता हमें पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करेगी।

मानव जीवन में संस्कार की अनिवार्यता क्यों जरुरी है

सुभाष अग्रवाल
एस.एम.सी. ग्लोबल

संस्कार भारतीय दर्शन और संस्कृति में निहित एक शब्द है, जो मूल्यों, सिद्धांतों और परंपराओं का एक समूह है जो किसी व्यक्ति के चरित्र और व्यवहार को आकार देता है। संस्कृत शब्द 'संस्कार' सम उपसर्ग 'कृ' धातु में धञ् प्रत्यय से व्युत्पन्न, इसमें किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने और ढालने के लिए डिजाइन किए गए अनुष्ठानों नैतिक संहिताओं और सांस्कृतिक प्रथा – प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

इसके मूल में, संस्कार कम उम्र से ही सद्गुणों को विकसित करने, अनुशासन स्थापित करने और जिम्मेदारी की भावना को पोषित करने की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। ये अनुष्ठान और प्रथाएं जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के विभिन्न पहलुओं में गहराई से समाहित हैं, और किसी व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक मानी जाती हैं।

संस्कार की अवधारणा धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं है बल्कि, यह नैतिक और नैतिक शिक्षा के व्यापक क्षेत्र तक फैला हुआ है। यह सम्मान, करुणा, अखंडता और विनम्रता जैसे मूल्यों को स्थापित करने के महत्व पर जोर देता है। संस्कार किसी के चरित्र को आकार देने, परिवार, समाज और बड़े विश्व के प्रति कर्तव्य की भावना को बढ़ावा देने में एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में कार्य करता है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में संस्कार से जुड़े अनुष्ठान अलग–अलग हैं। उदाहरण के लिए, गर्भावस्था के दौरान (गर्भाधान), जन्म के समय (जातकर्म), नामकरण समारोह (नामकरण) के दौरान, और पवित्र धागा समारोह (उपनयन) और विवाह (विवाह) सहित जीवन के विभिन्न चरणों में संस्कार किए जाते हैं। इनमें से प्रत्येक अनुष्ठान सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ से परे, संस्कार किसी के चरित्र को निखारने में शिक्षा के महत्व पर भी प्रकाश डालता है। यह न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए बल्कि समाज की भलाई के लिए भी ज्ञान प्राप्त करने के महत्व को रेखांकित करता है। इस अर्थ में, शिक्षा को एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जो ज्ञान प्रदान करती है और जिम्मेदारी की भावना पैदा करती है। समकालीन समय में, बदलते सामाजिक मानदंडों के अनुकूल संस्कार की अवधारणा विकसित हुई है। जबकि पारंपरिक अनुष्ठानों का महत्व बना हुआ है, संस्कार का सार शिक्षा, पालन–पोषण और व्यक्तिगत विकास के आधुनिक दृष्टिकोण में भी परिलक्षित होता है। लक्ष्य एक ही है – ऐसे व्यक्तियों को आकार देना जो अपने समुदायों और समग्र विश्व में सकारात्मक योगदान देते हैं।

दैनिक जीवन में संस्कार का महत्व बहुत गहरा है, क्योंकि यह व्यक्तियों के चरित्र को आकार देने, नैतिकता की भावना को बढ़ावा देने और समाज के समग्र कल्याण में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां कई प्रमुख पहलू हैं जो किसी के दैनिक जीवन में संस्कार के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

1. **नैतिक और नैतिक मार्गदर्शन:** संस्कार एक नैतिक दिशा–निर्देश के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए नैतिक दिशानिर्देशों का एक सेट प्रदान करता है। यह ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, करुणा

और विनम्रता जैसे गुण पैदा करता है, जिससे व्यक्तियों को विभिन्न स्थितियों में अच्छे नैतिक निर्णय लेने में मदद मिलती है।

2. **सांस्कृतिक पहचान और विरासतः** संस्कार सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत में गहराई से निहित है। यह व्यक्तियों को अपनी जड़ों से जुड़ने, सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित करने और पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाने में मदद करता है। सांस्कृतिक पहचान से यह जुड़ाव किसी की विरासत में अपनेपन और गर्व की भावना को बढ़ावा देता है।

3. **पारिवारिक और सामाजिक सद्भावः** कई संस्कार पारिवारिक और सामाजिक संबंधों पर केंद्रित होते हैं। बड़ों का सम्मान करना, रिश्तों का पोषण करना और सांप्रदायिक समारोहों में भाग लेना जैसी प्रथाएँ सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक और सामाजिक बंधन की स्थापना में योगदान करती हैं। यह, बदले में, एक सहायक और एकजुट समुदाय को बढ़ावा देता है।

4. **व्यक्तिगत विकासः** आत्म–अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और निरंतर सीखने के महत्व पर जोर देकर संस्कार व्यक्तिगत विकास में सहायक है। संस्कारों से जुड़े अनुष्ठानों में अक्सर ऐसे संस्कार शामिल होते हैं जो व्यक्तिगत विकास के चरणों को चिह्नित करते हैं, व्यक्तियों को भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

5. **आध्यात्मिक विकासः** कई लोगों के लिए, संस्कार का एक आध्यात्मिक आयाम है। यह व्यक्तियों को आध्यात्मिक प्रथाओं में संलग्न होने, उच्च आदर्शों के साथ जुड़ाव और जीवन के उद्देश्य की गहरी समझ को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करता है। ये आध्यात्मिक पहलू आंतरिक शांति, संतुष्टि और तृप्ति की भावना में योगदान करते हैं।

6. **शिक्षा और बुद्धिः** संस्कार न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए बल्कि समाज के लाभ के लिए भी ज्ञान प्राप्त करने के महत्व को रेखांकित करता है। शिक्षा को एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया माना जाता है जो अकादमिक शिक्षा से आगे बढ़कर ज्ञान, आलोचनात्मक सोच और जिम्मेदारी की भावना के विकास को शामिल करती है।

7 . **सामुदायिक योगदानः** संस्कार के माध्यम से स्थापित मूल्य व्यक्तियों को अपने समुदायों में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। चाहे दयालुता के कार्यों के माध्यम से, स्वयंसेवा के माध्यम से, या सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के माध्यम से, संस्कार सिद्धांतों द्वारा निर्देशित व्यक्ति समाज के कल्याण में सार्थक योगदान देने का प्रयास करते हैं।

8. **प्रतिकूल परिस्थितियों में लचीलापनः** संस्कार व्यक्तियों को शालीनता और धैर्य के साथ चुनौतियों सामना करना सिखाकर लचीलापन प्रदान करता है। संस्कारों के माध्यम से सीखे गए मूल्य कठिन परिस्थितियों से निपटने, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दृढ़ता और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए आधार प्रदान करते हैं।

संक्षेप में, संस्कार केवल अनुष्ठानों का एक समूह नहीं है बल्कि एक व्यापक दर्शन है जो दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में व्याप्त है। यह एक उद्देश्यपूर्ण और सार्थक अस्तित्व जीने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, व्यक्तियों के समग्र विकास और समग्र रूप से समाज की बेहतरी में योगदान देता है।

निष्कर्षतः संस्कार एक समृद्ध और बहुआयामी अवधारणा है जो भारतीय संस्कृति में गहराई से अंतर्निहित है। यह एक नैतिक दिशासूचक के रूप में कार्य करता है, व्यक्तियों को धार्मिकता के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है, और एक सामंजस्यपूर्ण और सदाचारी समाज के निर्माण में योगदान देता है। जैसे–जैसे समाज विकसित हो रहा है, संस्कार का सार प्रासंगिक बना हुआ है, जो उन कालातीत मूल्यों पर जोर देता है जो एक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन की नींव बनाते हैं।

श्रीहनुमच्चरितम् (क्रमश.......)

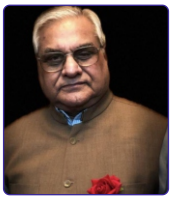

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

सम्पूर्ण हिन्दु समाज के आराध्य हनुमान जी मेरे हृदय में एक महाशक्तिशाली, ज्ञानवान्, अंजनी–पवन के पुत्र, श्रीरामदूत के रुप में एक महामानव के रूप में विद्यमान हैं। इसी भाव से अभिभूत होकर बाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा के गहन अध्ययन के बाद मुझे अनुभव हुआ कि इतना सर्वगुणसन्पन्न रामसेवक कोई मनुष्येतर प्राणी (बन्दर) नहीं हो सकता।

अपने इसी विचार को मैंने समय–समय पर श्रद्वालु समाज के समक्ष व्याव्यान रूप में प्रस्तुत किया। कोरोना काल में संयोग से ऑनलाइन प्रबोधन के माध्यम से भारत के अतिरिक्त जब इटली, जर्मनी, लेबनान, इंगलैंड व अमेरिका के प्रवासी भारतीयों ने अपने आराध्य ज्ञानगुण सागर–अतुलित बलधाम हनुमान जी के वास्तविक स्वरूप को जाना तो उन्होंने मुझसे इस तथ्य को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर समस्त विश्व के समक्ष रखने हेतु प्रस्तुत करने का अनुरोध किया।

इसी के परिणामस्वरूप 10 अध्यायों में 'श्रीहनुमच्चरितम्' पुस्तक लिखित रूप में प्रस्तुत कर पाया हूँ। आप सब प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष पुस्तक का प्रथम, द्वितीय व तृतीय अध्याय इस 'वनांचल की पाती' में पूर्व में प्रस्तुत किया जा चुका है। इस अंक में उसी का चतुर्थ अध्याय यहाँ प्रस्तुत है।

चतुर्थ अध्याय-किष्किन्धा कांड

सुग्रीव की श्रीराम से ऋष्यमूक पर्वत पर भेंट :–

महाशक्तिशाली वाली की रावण से संधि के कारण वानर राष्ट्र में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। इसी प्रकार मायावी नामक राक्षस के वध की घटना के बाद सुग्रीव के राज्य संभालने पर क्रोधवश जब वाली ने सुग्रीव को राज्य से निष्कासित कर दिया तब हनुमान ने स्वयं भी निष्कासन स्वीकार कर सुग्रीव का साथ दिया। सुग्रीव ने अपना राज्य व पत्नी दोनों को गंवा दिया। हनुमान का सहयोग प्राप्त कर सुग्रीव ने अपनी शक्ति को शनैः–शनैः संयोजित किया।

सीता–हरण

ऋष्यमूक पर्वत किष्किन्धा नगरी से कुछ ही दूरी पर था और उस दण्डकारण्य वन में ही स्थित था जहाँ श्रीराम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ आकर 'पंचवटी' में रूके थे। वहां वन में घूमते हुए अपने लक्ष्य के प्रति सजग श्रीराम ने अनेकों राक्षसों का वध किया था जो वाली से संधि के पश्चात् रावण द्वारा बनाई गई छावनियों में रह रहे थे। प्रत्येक राक्षस का संहार राक्षसराज रावण को एक परोक्ष चुनौती देता था। अतः रावण ने राम से बदला लेने हेतु सीता–हरण कर लिया।

राक्षसराज रावण छल से सीता–हरण के पश्चात् जब विमान से लंका की ओर जा रहा था, तब रास्ते में स्थित ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव व हनुमान ने अपने शिविर से आकाश मार्ग से जाती हुई किसी महिला का

क्रन्दन सुना। उस स्त्री ने 'हा–राम', हा–लक्ष्मण' का आर्तनाद करते हुए इन तेजस्वी पुरूषों को देखकर, इनको लक्ष्य कर, अपने वस्त्र व आभूषण फेंके। निश्चय ही इन राजसी पुरूषों को देखकर सीता को विश्वास जगा होगा कि मेरे इन चिन्हों को ये सुरक्षित रखेंगे और यदि श्रीराम मुझे खोजते हुए इनसे भेंट करेंगे तो उन्हें इनसे मेरे जाने के मार्ग का अनुमान होगा। वास्तव में ऐसा हुआ भी।

हनुमान की दूरदर्शिता

इस घटना से राजनीति विशारद हनुमान ने तुरन्त यह अनुमान लगाया कि ये स्त्री–हरण, राम द्वारा राक्षस–विनाश कार्यों का ही परिणाम है। बचपन में महर्षि अगस्त्य के आश्रम में शिक्षा–दीक्षा प्राप्त करते हुए हनुमान उनसे यह वृत्तान्त सुन चुके थे, तथा उनके मस्तिष्क में ऋषि वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने आये राम–लक्ष्मण की धुधंली छवि स्मृति रूप में भी विद्यमान थी। अतएव सुग्रीव को इन परिस्थितियों का संकेत कर अब वे राम– लक्ष्मण से भेंट की प्रतीक्षा करने लगे। यह निश्चित ही हनुमान की दूरदर्शिता का उदाहरण है।

हनुमान का यह भी अनुमान था कि राम भी अवश्य ही हमें खोज रहे होंगे। ऋषियों ने, जिन्होंने गुरू वशिष्ठ से मंत्रणा कर राक्षसों – दानवों के विनाश हेतु राम के निर्वासन की योजना बनाई थी, राम को भी अवश्य ही हनुमान, सुग्रीव–मिलन के संकेत दिये होंगे। दोनो को परस्पर एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता है और अन्ततः वह दिन आ ही गया।

श्रीराम से भेंट

दो तेजस्वी मानव आकृतियों को शैल शिखर की ओर बढ़ती देखकर सुग्रीव एक बार तो थोड़े भयभीत हो गये। उन्होंने इतने तेजस्वी एवं बलशाली मानव पहले

नहीं देखे थे। सुग्रीव को लगा कि कहीं बाली ने तो उनको मारने के लिये दोनों को न भेजा हो। वे भयभीत होकर स्वयं मलय पर्वत पर चले गये और हनुमान को ब्राह्मण वेष में जाकर उन तेजस्वी पुरूषों की जानकारी लेने के लिये कहा।

आपसी परामर्श से 'परीक्षण' की योजना कर ब्राह्मण वेश धारण कर हनुमान ने स्वयं जाकर उनसे भेंट की। उन्होंने सोचा, संभव है कि विपत्ति में वे दोनों मानव वाली से संधि करके आये हों, परन्तु हनुमान ने बचपन की धुंधली स्मृति से राम–लक्ष्मण को पहचान कर भी अपने मनोभाव छिपाकर, प्रणाम कर, विनम्रता से उनका परिचय मांगा–

''को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा,
छत्री रूप फिरहीं बन बीरा।।''

रामचरितमानस किष्किधां कांड. 4

हे वीर! सांवले और गौर शरीर वाले आप कौन हैं, जो

क्षत्रिय रूप से वन में घूम रहे हैं। बाल्मीकि रामायण के अनुसार– ''सूर्य व चन्द्र के समान तेजस्वी सुवर्ण देह वाले आप कौन हैं'' ?

तब रामचन्द्रजी ने कहा,

''कोसलेस दसरथ के जाए।
हम पितु वचन मानि बन आए।।
राम नाम लछिमन दोउ भाई।
संग नारि सकुमारि सुहाई।। 1.1
इहाँ हरी निसिचर वैदेही।
विप्र फिरहिं हम खोजत तेहि।। 1.2

रामचरितमानस, किष्किंधा कांड

''हम कौशलराज दशरथ जी के पुत्र हैं और पिता का वचन मानकर वन में आये हैं, राम–लक्ष्मण नाम के हम दोनो भाई हैं। वन में किसी राक्षस ने मेरी पत्नी का हरण कर लिया है। हे ब्राह्मण! हम उसी को खोजते वन में घूम रहे हैं।

हनुमान जी उनको पहचान कर, उनका उत्तर जानकर रोमांचित हो उठे और उनकी स्तुति करते हुए उनके चरणों में गिर पड़े। तब श्रीराम ने उन्हें उठाकर अंक में भर लिया, हृदय से लगा लिया और कहा ''विप्रवर, आप ये क्या कर रहे हैं ?'' तब श्रीराम की भी धुंधली स्मृति जागृत होने लगी, तथापि उन्होंने हनुमान से परिचय माँगा। हनुमान ने अपना परिचय स्पष्ट शब्दों में बताया ''हमारे राजा सुग्रीव धर्मात्मा हैं और आप से मित्रता चाहते हैं। मैं पवनपुत्र हनुमान उनका मंत्री हूँ।

श्रीराम द्वारा लक्ष्मण का संशय–निवारण :–

हनुमान के सद्व्यवहार, विनम्रता एवं शुद्ध संभाषण से प्रभावित होकर श्रीराम लक्ष्मण से हनुमान के विषय में कहते हैं, ''देखो लक्ष्मण, ये वेदों के ज्ञाता लगते हैं। जिस दूत का ऐसा शुद्ध भाषण व व्यवहार हो उसके राजा के अवश्य ही सब कार्य सिद्ध होंगे।''

बाल्मीकि लिखते है –

''नानृग्वेदविनीतस्य ना यजुर्वेदधारिणः।
ना सामवेद विदुषः शक्यमेवं प्रभाषितुम्।।''

वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकांड 3.28

''जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नही किया तथा जो सामवेद का विद्वान नही है, वह इस प्रकार सुन्दर भाषा में वार्तालाप नही कर सकता।''

''नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम्।
बहु व्याहरतानेन न किंचिदपशब्दितम्।।''

किष्किन्धाकांड 3.29

निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है क्योंकि बहुत सी बातें बोले जाने पर भी इनके मुख से कोई अशुद्ध शब्द नहीं निकला।

श्रीराम–सुग्रीव में मैत्री संबंध की स्थापना

श्रीराम–हनुमान में आत्मीय संबंध होने पर हनुमान ने श्रीराम को बताया कि इस ऋष्यमूक पर्वत पर वानरराज सुग्रीव रहते हैं। आप उनसे मित्रता कीजिए और उन्हें दीन जानकर निर्भय कर दीजिये। वह स्वयं भी लगभग इन्ही परिस्थितियों में निर्वासित जीवन जी रहे हैं

व उनकी पत्नी भी हर ली गई है, वह सीता जी की खोज में आपकी अवश्य सहायता करेंगे।

सुग्रीव ने भी हनुमान से सारा वृत्तांत सुनकर यह जान लिया कि ये दोनों कुमार बाली के द्वारा नही भेजे गये हैं तथा अपनी स्त्री की खोज में घूम रहे हैं। सुग्रीव की सहमति पाकर हनुमान जी ने दोनों ओर की सब कथा सुनाई एवं स्वयं पुरोहित बनकर राम व सुग्रीव की मैत्री के लिये अग्नि को साक्षी कर, दोनो से प्रदक्षिणा करवाकर यज्ञ का सम्पादन किया।

''पावक साखी देई करी, जोरी प्रीति दृढ़ाई''–

रामचरितमानस किष्किधाकांड 3.4

जब लक्ष्मण जी ने श्रीराम की पत्नी जानकी जी के हरण की कथा सुनाई, तब सुग्रीव के संकेत से हनुमान ने उन्हें सीता जी द्वारा गिराये वस्त्राभूषण दिखाये तथा उनको सीताजी की खोज का आश्वासन देते हुए पूरा सहयोग करने का वचन दिया।

''गगन पंथ देखी मैं जाता।
परबस परी बहुत बिलपाता।। 4.2
''राम राम हा राम पुकारी।
हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी।।
मांगा राम तुरत तेहि दीन्हा।
पट उर लाई सोच अति कीन्हा।।

रामचरितमानस, किष्किधाकांड 4.3

सुग्रीव ने अपने भाई वाली द्वारा अपने ऊपर किये गये अत्याचारों के विषय में बताया कि उसके डर से वह यहां ऋष्यमूक पर्वत पर रहता है। सुग्रीव की व्यथा सुनकर श्रीराम ने वाली–वध कर उसे अभयदान दिया। तदनन्तर श्रीराम की आज्ञा से लक्ष्मण जी सुग्रीव का राजतिलक कर, हनुमान के परामर्श से वाली के पुत्र अंगद को युवराज घोषित करते हैं

''तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा,
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।''

श्रीहनुमानचालीसा

सुग्रीव के प्रति कर्त्तव्यपरायणता

हनुमान सुग्रीव के मंत्री होने के नाते अपने राजा सुग्रीव का सदैव ध्यान रखते थे। किष्किन्धा का राज्य प्राप्त करने के पश्चात् प्रमादवश जब सुग्रीव रामकाज को भूल जाता है, लक्ष्मण जी क्रुद्ध हो किष्किंधा जाते हैं, तब सुग्रीव को लक्ष्मण के सामने आने का साहस नहीं होता। हनुमान जी ही उनको शांत करने हेतु वाली की पत्नी तारा को साथ लेकर लक्ष्मण जी से मिलते हैं

''तारा सहित जाइ हनुमाना।
चरन बंदौ प्रभु सुजस बखाना।। 19.2
करि विनती मंदिर लै आए।
चरण पखारि पलंग बैठाए।।'' 19.3

रामचरितमानस किष्किधाकांड

महाराज के सम्मान की रक्षा हेतु, क्रोध शांत होने पर ही लक्ष्मण जी से सुग्रीव की भेंट कराते है। सुग्रीव ने लक्ष्मण जी से क्षमा याचना की तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी वानर सेना को विभिन्न समूहों में सीता की खोज में भेजा।

सुग्रीव का अतिशय विश्वास

इस प्रकार हनुमान जी की व्यवहार–कुशलता एवं कर्तव्यपरायणता के कारण ही सुग्रीव की हनुमान में दृढ़ प्रीति व अतिशय विश्वास इन शब्दों में व्यक्त होता है।

सुग्रीव कहते हैं :–

''हे हनुमान! त्वं मनुष्येणा विज्ञेयाः''

अर्थात् ''हे हनुमान! तुम नीतिशास्त्र के ज्ञाता, बल–बुद्धि– पराक्रम, देश–काल का अनुसरण व विवेकपूर्वक नीतिपूर्ण व्यवहार में दक्ष हो।''

x

केन्द्रीय संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम - 10 फरवरी, 2024

10 फरवरी शनिवार को संगठन का केन्द्रीय वार्षिक **'संस्कार परिवार मिलन'** कार्यक्रम त्यागराज स्टेडियम नई दिल्ली के विशाल सभागार में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें 6000 से ज्यादा परिवारों की उपस्थिति हुई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में 1 घंटा से अधिक समय में दिल्ली, एन.सी.आर तथा अन्य प्रांतों से आये प्रतिभा विकास केन्द्रों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न कार्यक्रमों के प्रदर्शन से अभिभूत दर्शकों ने बार–बार तालियां बजाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। बाद में विख्यात संगीतकार, और अभिनेता, कलाकार श्री शेखर सेन द्वारा भक्त कवि सूरदास के जीवन की एकल प्रस्तुति को भी दर्शको ने खूब सराहा।

केन्द्रीय मंत्री श्री मयंक शेखर, महिला समिति सदस्या श्रीमती मनस्वी पाण्डे तथा प्र.वि.केन्द्र के केन्द्रीय सह–संयोजक श्री बीरेन्द्र कुमार सिंह के कुशल मंच संचालन में दिल्ली गुरूग्राम के साथ असम तथा उड़ीसा के प्रतिभा विकास केन्द्र के छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रभावी प्रस्तुति के द्वारा दर्शकों को न केवल बांधे रखा बल्कि उन्हें आह्लादित और आश्चर्यचकित कर दिया।

ब्रह्मनाद, ओम, गायत्री मंत्र तथा महामृत्युंजय मंत्रोच्चार, पांच प्राणायामों के अभ्यास तथा देशभक्ति गीत के सामूहिक गायन द्वारा कार्यक्रम प्रारंभ करने के पश्चात 2 वर्ष पूर्व प्रारंभ किये गये प्रतिभा विकास केन्द्र के दिल्ली, एन.सी.आर तथा विभिन्न प्रांतों से आये बच्चों ने मंत्रोच्चार, सरस्वती वंदना, गणेश वंदना, बंगला गीत पर नृत्य, स्वास्थ्य का संदेश देते हुए योगासनों का प्रदर्शन एवं सुन्दर गीतों के गायन, प्रांतीय नृत्यों का अभूतपूर्व, मनोहारी प्रदर्शन कर वंचित–पिछड़े समाज की आंतरिक योग्यता को नगरीय संपन्न समाज के समक्ष प्रस्तुत कर यह संदेश दिया कि यदि इस समाज के बच्चों को अवसर प्रदान कर इनकी प्रतिभा को निखारा जाये तो ये बच्चे भी अपने परिवार तथा देश का नाम रोशन कर सफल नागरिक बन कर देश की उन्नति में योगदान कर सकते हैं। निश्चय ही प्रतिभा विकास केन्द्र पिछड़े नगरीय–वनवासी क्षेत्र में शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए गरीबी दूर करने के साथ परोक्ष रूप में उग्रवाद, धर्मान्तरण, तथा सामाजिक विशमता को दूर करने में महती भूमिका निभायेंगे।

इसके पश्चात गुरूकुल के विद्यार्थियों द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के मध्य गीता मनीषी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज, विशिष्ट, अतिविशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात गुरूग्राम, उत्तरपूर्व प्रान्त असम तथा उड़ीसा प्रतिभा विकास केन्द्र के वनवासी विद्यार्थियों ने अपने प्रातो के नृत्य की छटा बिखेरते हुए दर्शकों को भावनिभोर कर दिया। शाम 6.00 बजे से लेकर शेखर सेन ने 2 भागों में कृष्ण भक्त कवि सूरदास के जन्म से लेकर 105 वर्ष की आयु में मृत्यु तक उनके जीवन के सुख–दुख के अनुभव को जीवन्त रुप में प्रस्तुत करते हुए अति आकर्षक एवं भावुक रूप में उकेरा। दर्शकों को उस समय उनमें भक्त सूरदास की ही छवि दीख रही थी।

विक्रमी संवत 1535 में फरीदाबाद में जन्मे सूरदास जी 4 भाईयों में सबसे छोटे थे। जन्मजात नेत्रविहीन होने पर भी वे बचपन से ही कृष्णभक्ति में लीन तथा प्रज्ञाचक्षु थे। उन्होने अपने जीवन के अंतिम समय में स्वामी वल्लभाचार्य, भ्चतुभुजदेव जी तथा तुलसीदास जी से भी भेंट की। भक्त कवि सूरदास द्वारा गाये गये कृष्ण के बालरूप के अनेक गीतों की शेखर सेन ने अत्यंत भावपूर्ण प्रस्तुति की।

श्री शेखर सेन की 2 भागों में प्रस्तुति के मध्य मंच पर अतिथियों के सम्मान हेतु विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री मिलिन्द पराण्डे जी, गीतामनीषी पू0 ज्ञानानंद जी, संगठन प्रभारी वीरेन्द्र जी, प्रांत संघचालक डा.अनिल अग्रवाल, अतिविशिष्ट अतिथि विवेक नागपाल जी (रोजमेरता), ड़ा.पायल कनोडिया (एम.3एम. ग्रुप), केन्द्रीय अध्यक्ष मनोज अरोड़ा जी, तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों को मंच पर आमंत्रित कर संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा इन महानुभावों के परिचय के साथ श्रीराम मंदिर स्मृति चिन्ह तथा संगठन का साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया गया। समस्त आमंत्रितों ने प्रतिभा विकास केन्द्र की **सेवाव्रती आचार्य प्रशिक्षण मार्गदर्शिका** तथा **वनांचल की पाती** का विमोचन किया।

केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा ने अपना स्वागत भाषण 'जय श्रीराम' के उद्घोष के साथ शुरू कर श्रीराम प्राण–प्रतिष्ठा समारोह को भारत के नवयुग की शुरूआत का प्रथम कार्यक्रम बताते हुए कहा कि 22 जनवरी का दिन भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। उन्होने बताया कि मा. वीरेन्द्र जी के मार्गदर्शन में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन नगरीय एवं वनक्षेत्रों में कठिन कार्यों को मूर्त रूप प्रदान कर आगे बढ़ा रहा है। आप उपस्थित जन भी इस संगठन को गति देने में अपना सहयोग दें, अधिकाधिक परिवारों को जोड़ें जिससे संगठन एक लाख परिवारों को जोड़ने का लक्ष्य पूरा कर सके।

संगठन के प्रेरणास्त्रोत मा. वीरेन्द्र जी ने अपने उद्बोघन में 2वर्ष पूर्व प्रारंभ किये गये नये आयाम प्रतिभा विकास केन्द्र की चर्चा करते हुए बताया कि देश के सुदूर जंगल, पहाड़ों के 40 करोड़ के वंचित समाज के 18000 बच्चे प्रतिभा विकास केन्द्र से जुड़कर शिक्षा, संस्कार, और स्वाभिमान शिक्षा, प्राप्त कर रहे हैं तथा इनके परिवार भी संस्कार परिवार योजना से जुड़े हैं जिनका मासिक मिलन होता है। दूसरी ओर नगरीय सम्पन्न परिवारों को भी संस्कार परिवार मिलन योजना के 5 महत्वपूर्ण कार्यक्रमों द्वारा सनातन संस्कारों से जोड़ने का कार्य कर रहा है जिससे वृद्धाश्रम का चलन बंद हो, तथा बच्चे अपने माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी से संस्कार प्राप्त कर सकें। संगठन यही विषय दिल्ली की झुग्गी–झोपड़ी बस्ती में भी लेकर जा रहा है। इनके प्रतिभा विकास केनद्र के आचार्य भी नगरीय समाज के हैं जो इन बच्चों की प्रतिभा विकसित करने में परिश्रमपूर्वक कार्य कर रहे हैं, जिसे आप लोगों ने प्रत्यक्ष देखा है। हमारी ये योजनाएँ निस्संदेह देश को भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से समृद्धिशाली बनाने में सहायक होंगी जिससे भारत विश्व गुरू बनेगा।

वनांचल की पाती

विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री श्री मिलिन्द पराण्डे जी ने श्रीराम का स्मरण करते कहा कि सबके हृदय में श्रीराम को प्रकटाने के लिये उनके समरसता, शौर्य, पराक्रम मर्यादापूर्ण जीवन का अनुसरण भी जरूरी है तभी रामराज्य संभव होगा। इस दृष्टि से वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के कार्य बहुत सहयोगी होंगे। प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों के कार्यक्रम वीरता, शौर्य, भक्तिरस का मिश्रित मूर्त रूप सिद्व हो रहे है। इस कल्याण कार्य की गति बढ़ाने में दिल्लीवासी अपना योगदान करें। नगरीय सम्पन्न परिवारों को सौभाग्य मिला है सेवा का, आपकी संवेदनशीलता के द्वारा समाज का श्रेष्ठ कार्य हो रहा है। अभी भी करोड़ों जन गरीबी रेखा से नीचे जी रहे हैं। मेरा विश्वास है कि इस संगठन को आप सभी नगरवासियों का सहयोग, आशीर्वाद मिलेगा।

गीता मनीषी पू.ज्ञानानन्द महाराज जी ने अपने मार्गदर्शन में संगठन के कल्याणकारी कार्यों को एक यज्ञ, अनुष्ठान की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि भारत अद्‌भुत अलौकिक दिव्य परम्पराओं का देश है, इसे हमारे भविष्य के परिवारों, बच्चों तथा समाज के जन–जन तक पहुचाने का कार्य यह संगठन कर रहा है। संगठन अपनी बहुमुखी योजनाओं द्वारा वनवासी–नगरीय समाज में समन्वय बिठाने का दिव्य कार्य कर रहा है, निश्चय ही यह कार्य नगर–वन में सेतु बनाने का सराहनीय प्रयास है। प्रभु राम अयोध्या के राजमहल में पले–बढ़े परंतु उन्होंने 14 वर्ष का वनवास ग्रहण कर शबरी, निषादराज केवट का उद्धार तथा वनवासियों के सहयोग से दुष्ट राक्षसों का संहार किया। इसी प्रकार श्रीकृष्ण का 11 वर्ष का जीवन काल ग्वाल–बालों तथा निर्धन सुदामा के साथ रहने का है जिन्होंने प्रेम के कारण सुदामा को सिंहासन पर बिठाया तथा स्वयं उनके पैरो में बैठते हैं।

इस प्रकार भारत में परम्पराओं, संस्कृति के रक्षण, पुनर्स्थापन के लिये ही स्वयं भगवान उच्चासन पर बैठकर नहीं अपितु समाज के साथ जुड़कर, मिलकर कार्य करते है। यही ईश्वरीय कार्य वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन आप सब के सहयोग से कर रहा है। उन्होंने प्रतिभा विकास केन्द्र के प्रांतो के बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन बच्चों में राष्ट्रीयता का भाव सराहनीय है। भक्त सूरदास, अष्टावक्र जैसी प्रतिभाएं सुदूर वनक्षेत्रों में भी मिल सकती हैं। अतःहम अपने सामर्थ्य का सदुपयोग ऐसे समाज के लिये करें जो भारत को विश्वगुरू बना सके।

कार्यक्रम के अंत में अनेक कार्यकर्ताओं ने श्री शेखर सेन के साथ फोटो खिंचवाई। शेखर सेन जी ने भी कुछ वाक्यों में शुभकामना देते हुए कहा कि शुभ कार्यो का परिणाम भी शुभ होता है। अतः आप सभी महानुभाव प्रतिभा विकास केन्द्र के कार्यों में सहयोग दें। मैने दिल्ली में गत वर्ष तुलसीदास की प्रस्तुति दी तो राम मंदिर निर्माण हुआ, अब सूरदास की एकल प्रस्तुति दी है, आगे भगवदिच्छा है। सभी कार्यकर्ताओं, श्री शेखर सेन की टीम तथा सभागार के कार्यकर्ताओं, उपस्थित दर्शकवृन्द के प्रति धन्यवाद प्रकाशन के साथ भोजन प्रसाद के ग्रहण द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

मैं पीपल का पेड़

आपको २४ घंटे ऑक्सीजन देता हूँ।
आप मेरी जड़ो में खंडित मूर्ति चित्र
एवं पूजा सामग्री रख जाते है
जिससे मुझे तकलीफ होती है।
कृपया आप पूजा सामग्री घर के
गमलो में डाले और खंडित
मूर्ति एवं चित्रों को जमीन में विसर्जन करे।
आप सिर्फ मुझे केवल जल अर्पित करे।

निवेदक :-
सुरेंदर चावला
प्रधान सुविधा कुञ्ज

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन
(वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

VRPF

VRPF
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन
(वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)
संस्कार परिवार मिलन
शनिवार, 10 फरवरी, 2024

VRPF

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

संस्कार परिवार मिलन समारोह
अतिथि सम्मान
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

श्रीहरि
VRPF

बच्चे सीखें भगवान श्रीराम के जीवनादर्श

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक

वर्तमान में भारत सहित समस्त विश्व चारित्रिक दुर्बलता की व्याधि से पीड़ित है। आए दिन समाचार–पत्रों में बीभत्स दुर्घटनाओं के समाचार भरे रहते हैं। इन कुप्रभावों से बच्चे भी अछूते नहीं हैं। वे हत्या, दुष्कर्म, ठगी, अपहरण,चोरी, आत्महत्या, धूम्रपान, नशासेवन, लवजिहाद जैसी अनैतिक गतिविधियों के शिकार हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि बच्चों को आदर्श जीवन जीने के संस्कार नहीं मिल रहे हैं। उनमें मानवता के गुण न रहकर दानवता के दुर्गुण बढ़ रहे हैं। वे अपनी सनातन संस्कृति से कट चुके हैं और आधुनिकता के चक्कर में उन्मुक्त जीवन शैली एवं पाश्चात्य संस्कृति के चंगुल में फँस चुके हैं। सोशल मीडिया द्वारा परोसी जा रही अश्लीलता में लिप्त होकर किशोर दिगभ्रमित हैं। मोबाइल की बुरी लत ने उन्हें सद्ग्रंथों से दूर कर दिया है और वे सतही मनोरंजन में आनंद का अनुभव कर रहे हैं। इससे अपरिपक्व मस्तिष्क के बच्चों का चारित्रिक पतन हो रहा है।

भारतीय संस्कृति सदैव से मानवमात्र के लिए कल्याणकारी रही है। चरित्र निर्माण की सीख के लिए हमें भटकने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे समक्ष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जैसे महानायक का जीवन–चरित्र आदर्श रूप में प्राप्त है।

बाल्यकाल चरित्र – शिक्षा का समुपयुक्त समय है। इन वर्षों में हम जो सीख लेते हैं, उसका प्रभाव जीवनभर हमारे साथ रहता है और हमारे आचरण एवं कार्य – व्यवहार को प्रभावित करता है। बालक को सच्चरित्र बनाने में अच्छी आदतों, परिस्थितियों और शिक्षाओं का योगदान होता है। अतः बालक को श्रीराम जैसे उत्तम चरित्र से ओतप्रोत होना चाहिए, इसके लिए उसे उक्त दिशा का पथिक बनना चाहिए। श्रीराम ने संयमित, अनुशासित, अध्यवसाय और कर्म–निष्ठ जीवन के जो आदर्श प्रस्तुत किए, वे हर बच्चे के लिए उपयोगी और प्रेरणादायी हैं।

बचपन से ही संयमित दिनचर्या :– श्रीराम बचपन से ही ब्रह्ममुहूर्त में जागते थे। अपने माता–पिता, गुरुजन तथा अपने से बड़ों को सम्मान देते थे। उनकी आज्ञा के अनुसार ही सारे कार्य करते थे। उनके इन गुणों के कारण लोग अत्यंत हर्षित होते थे। मनुस्मृति में कहा गया है कि बड़े – बूढ़ों की वंदना तथा सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है।

श्रीराम साधारण बालकों की तरह सखाओं के साथ खेलते – कूदते भी थे और स्वाध्याय भी चालू रखते थे।वे सद्ग्रंथों का अध्ययन करते थे और श्रीगुरु से श्रवण भी करते थे। वे अपनी विनय, नम्रता, सुशीलता और सहज स्नेह से बचपन से ही लोकप्रिय हो चले थे।

श्रीराम की मातृभक्ति :– माता कौशल्या सहित माता कैकेयी और सुमित्रा के प्रति उनका महान आदरभाव था। माता कैकेयी ने उनको कठोर वचन कहे और वन में जाने का आदेश दिया। माता कौशल्या ने आपसे कहा कि "पिता से, माता की आज्ञा बढ़कर होती है, इससे तुम वन न जाओ।" तब आपने उन्हें माता कैकेयी की आज्ञा बतलायी। उन्होंने माता कैकेयी की कभी निंदा नहीं की।

अनूठी पितृभक्ति :– पिताश्री दशरथ की स्पष्ट आज्ञापालन हेतु श्रीराम ने पिता का संकेत मात्र पाकर प्रसन्नतापूर्वक 14 वर्ष के लिए अयोध्या त्याग कर दिया।

श्रीदशरथ जी ने वन – गमन के लिए स्पष्ट शब्दों में आज्ञा नहीं दी थी, कैकेयी माता की आज्ञा में उनकी मौन सम्मति मात्र थी, तथापि आपने पिता के वचनों का सम्मान करते हुए वन – गमन को स्वीकार किया।

आदर्श गुरुभक्ति :– मुनि विश्वामित्र जी श्रीराम के शिक्षागुरु थे। वे अपने गुरुवर की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।वे श्रीगुरु के जागने के पहले ही जाग जाते थे, उनके लिए फूल इत्यादि लाते थे। छोट – मोटे काम भी गुरु की आज्ञा से ही करते थे। श्रीगुरु के शयन करने पर चरणसंवाहन करते और उनकी आज्ञा पाकर ही स्वयं शयन करते थे। मुनि वशिष्ठ जी कुलगुरु थे, वे उनकी सेवा करना भी अपना सौभाग्य समझते थे।

अतुलनीय भ्रातृप्रेम :– श्रीराम का भ्रातृप्रेम अतुलनीय था। बचपन से ही वे अपने भाइयों से अपार स्नेह करते थे। सदा उनकी रक्षा करते थे और उन्हें प्रसन्न रखते थे। श्रीराम को जो भी कोई उत्तम भोजन या वस्तु मिलती थी, उसे वे पहले अपने भाइयों को देकर पीछे स्वयं खाते या उपयोग करते थे। श्रीराम अपने भाइयों के साथ ही भोजन करते थे। वे अपने भाइयों का मन रखने के लिए खेल में हार भी जाते थे। उन्हें अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र होने का लेशमात्र भी घमंड नहीं था। वे अपने राज्य के प्रत्येक बच्चे के साथ मित्रता रखते थे और उनके साथ नित्य वन में खेलने जाते थे।

पशु–पक्षियों से प्रेम :– बच्चे बहुत नटखट होते हैं। वे चिड़ियों पर ढेला फेंककर उड़ा देते हैं, हो–हो करके भगा देते हैं। पशुओं को मारते हैं या उन्हें तंग करते हैं। यह बुरी बात है, किसी जीव को सताना नहीं चाहिए, सदैव उनके प्रति दयाभाव रखना चाहिए। ऐसी सुंदर सीख भगवान श्रीराम ने दी है। उनके बचपन का एक दृष्टांत है। श्रीराम अपने महल में कौवे (काकभुशुंडि) के साथ खेल रहे थे। किलकारी मारते हुए जब वे काक को पकड़ने के लिए दौड़ते हैं तो काक उड़कर उनकी पहुँच से दूर हो जाता है। ऐसे में वे पुआ दिखाकर उसे बुलाते हैं। एक अन्य प्रसंग के अनुसार भगवान शिव राम के बाल रूप को देखने के लिए मदारी बनकर अयोध्या आते हैं। उनके साथ वानर रूप में हनुमान जी होते हैं। वानर को देखकर श्रीराम उन्हें पाने की हठ करते हैं तो राजा दशरथ ने मदारी बने शिव से वानर रूपी हनुमान को मांग लिया। इसके बाद बहुत दिनों तक हनुमान जी, श्रीराम के साथ रहे। वे बचपन से ही परम गोभक्त भी थे।

किशोरावस्था में श्रीराम :– श्रीराम जब किशोरावस्था की ओर पदार्पण कर रहे थे, तो वे अपने भाइयों और सखाओं के साथ अयोध्या की गलियों में विचरण करते थे।हाथ में धनुष – बाण लिए हुए उनका मनमोहक रूप निरखकर नगरवासी अभिभूत हो जाते थे। वे सखाओं के साथ सरयू नदी में नौका विहार करते थे। किशोरावस्था में ही उन्होंने धार्मिक अनुष्ठानों में रत विश्वामित्र मुनि के यज्ञ–रक्षार्थ ताड़का और सुबाहु राक्षस का वध किया। वे शस्त्र और शास्त्र दोनों विषयों में पारंगत थे।

श्रीराम संपूर्ण विश्व के आदर्श हैं। इन्हीं आदर्शों की प्राप्ति के लिए मनुष्य – जाति राम – चरित्र को बार बार सुनती है और पढ़ती है। इस विलक्षण और शक्तिशाली चरित्र से मानवमात्र अपने दिन – प्रतिदिन के जीवन में मार्गदर्शन प्राप्त कर कृतकृत्य हो सकता है। बालकों को राम कथा पढ़कर और उस पर चिंतन – मनन करके, श्रीराम के चरित्र का अनुसरण करना चाहिए। शिक्षकों और अभिभावकों को भी चाहिए कि वे बच्चों को श्रीराम के उदात्त चरित्र की कथाएँ सुनाकर, उन्हें राम बनने के लिए प्रेरित करें। बालकों के चरित्र निर्माण से ही देश का समुचित विकास संभव है। आज के बच्चे ही देश के भावी कर्णधार हैं और वे ही सच्चा रामराज्य ला सकते हैं।

संस्कार से संस्कृति

मयंक शेखर
केन्द्रीय मंत्री, प्रभारी पूर्वी संभाग
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

संस्कार का अर्थ है दुर्गुणों को हटाकर उसकी जगह सद्‌गुणों का आचरण। जड़ पदार्थों का संस्कार उनके रूप परिवर्तन द्वारा उपयोगी बनाने से होता है, किंतु जो चेतन है अर्थात जिनमें प्राण हैं उनमें उनके संस्कार, भावों की प्रतिक्रिया से प्रकट होते है। मनुष्य के संदर्भ में यह उसकी आत्मा पर स्थायी प्रभाव से होता है।

मनुष्य में जन्म से ही सीखने की प्रबल प्रवृत्ति होती है। अतः हिन्दू संस्कृति में मनुष्य को मानव बनाने व बनाये रखने के लिए हमारे यहाँ शास्त्रों में पूरे जीवनकाल को सोलह बार संस्कार करने का विधान किया गया है। इससे न केवल हमारे आचार–विचार का शुद्धिकरण होता है अपितु ये हमारी आध्यात्मिक उन्नति का कारण बनते हैं।

संस्कार जब जीवन में प्रवेश करते हैं तो मनुष्य उसी के अनुसार कर्म, व्यवहार, आचरण करने लगता है। और यही आचरण उसकी संस्कृति होते हैं। सब प्रकार के पुरुषार्थ कर सुख के साथन जुटाकर, आनंद से जीवन बिताना सभ्यता है। पर स्वयं भी सुख से जीना और अन्य सभी के सुख की कामना करना, सुख में जीने देना संस्कृति है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्चन्तु मा कश्चिद् दुखाभाग्भवेत्।

हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वश्रेश्ठ संस्कृति है। इसका पोषण और विकास विश्व के सर्वश्रेष्ठ चिंतन के आधार पर हुआ है। हम 'मैं' नहीं 'हम' में विश्वास करते है। यहाँ तक कि पूरे विश्व को ही परिवार मानते हैं :– **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** की घोषणा करते हैं। पीछे हमने देखा कि G20 के आयोजन में हमारे इस चितंन ने पूरे विश्व पर हमारे संरकारों की अमिट छाप छोड़ी।

हमारे ग्रंथ ऐसे अनेक विचारों से भरे पड़े हैं जिनके आधार पर मानव जीवन संस्कार से पोषित होता है। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', "मातृवत परदोषु, पर द्रव्येषु लोष्ठवत्"। अब भला ऐसे विचारों को मानने वाले समाज में किसी स्त्री का अपमान हो सकता है ? यह हमारा दुर्भाग्य है कि इन्हीं संस्कारों की कमी के चलते भारत जैसे देश में भी

महिलाओ के प्रति अपराधों की घटनाएँ देखने–सुनने को मिलती है।

वेदों में संगठन सूक्त है :–

''समानी व आकूतः, समाना हृदयानि वा'

सब मिलकर सगंठन भाव से शत्रु से लड़ें।

'कृण्वंतो विश्वं आर्यम्''

सम्पूर्ण विश्व को ही श्रेष्ठ बनायेंगे, केवल हिन्दुओं को ही नहीं।

'न दैन्यं न पलायनम्'' केवल अपने लिये नहीं, अपितु अपनों के लिये जीवन जियें।

हम अपने सनातनी देवी–देवताओं की आरती के बाद घोष लगाते हैं :– 'प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, 'पूरे विश्व में किसी अन्य संस्कृति में सभी के कल्याण की कामना करने वाला ऐसा विचार नहीं है।

देश और समाज और धर्म की रक्षा के लिये समाज में ''क्षात्र'' भाव भी प्रबल रहना चाहिये। और इसलिये सज्जनता के साथ–साथ शक्ति की उपासना को भी महत्व दिया गया है। हमारे सभी देवी–देवता अस्त्र–शस्त्र–धारी हैं। सभी ने किसी न किसी असुर, राक्षस या दुष्ट का वध किया है। अनेकों का तो अभ्युदय भी इसी लिये हुआ। यदि समाज सबल और सक्षम है तभी वो अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा कर सकता है।

कवि ने लिखा भी है!

''जग नहीं सुनता कभी
दुर्बल जनों का शांति प्रवचन,
सिर झुकाता है उसे
जो कर सके रिपु मान–मर्दन,
हृदय में हो प्रेम लेकिन,
शक्ति भी कर में प्रबल हो,
यह सफलता मंत्र है करना इसी की साधना है।,

उपरोक्त सभी श्रेष्ठ विचारों को केवल सुनने–समझने तक ही सीमित न रखकर व्यवहार में भी लाना होगा। तभी हम सही परिप्रेक्ष्य में संस्कारित समाज का निर्माण कर पायेंगे और भारत को पुनः ''विश्व गुरू'' के स्थान पर आरूढ़ कर पायेगे।

संस्कार विहीन शिक्षा

श्रीराम अग्रवाल
केन्द्रीय मंत्री एवं दक्षिणी संभाग, प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

बन्धुओं ! आज हम सभी अपनी युवा पीढ़ी के भविष्य को लेकर चिंतित हैं, क्योंकि इस समय से 2000 के दशक में जो युवा पीढ़ी तैयार हुई है वो पाश्चात्य सभ्यता से इतनी आकर्षित है कि उनको भारतीय संस्कृति का अहसास कराना असम्भव सा लगता है क्योंकि 80 के दशक में जो चीजे उनके सामने आयी वो बिल्कुल पाश्चात्य सभ्यता को गौरवान्वित करती हैं। हमारी शिक्षा पद्धति धीरे–धीरे नष्ट होती गई और 80 के दशक में **'हम दो हमारे दो'** पर हावी हो गयी। हम जो 60 के दशक के है हमारे समक्ष यह आ गयी थी किन्तु 80 के दशक से यह प्रभावी हो गयी जिसका मूल कारण हमारी संस्कृति का पूर्णतया परिवर्तित होना है। यदि हम समझ सके तो हमें थोड़ा पीछे जाना होगा।

हमारी 700 वर्ष की गुलामी जिसमें मुसलमान और अंग्रेजो का काल था इसमें हमारी गुरूकुल परम्परा लगभग लगभग समाप्त हो गयी और उसके स्थान पर स्कूल की शिक्षा आ गयी, जब अग्रेजी को लगा कि इनकी शिक्षा पद्धति को यदि नष्ट नहीं किया गया तो ये अधिक समय तक हमारे गुलाम नही रह सकते क्योंकि इस कालखण्ड में क्षत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, गुरू गोविन्द सिंह और रानी लक्ष्मीबाई जैसी विभूतियों ने हमारी रक्षा की थी। इसी कालखण्ड में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी आये जो कि बचपन से ही देशभक्त थे। उनके बचपन की अनेक कहानियां, उनकी देशभक्ति का ज्वलंत उदाहरण थीं। उन्होने विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों में काम किया, किन्तु उनका मन इस बात को लेकर विचलित रहता था कि आखिर हम लोग 700 वर्ष तक गुलाम क्यों रहे और इसका निष्कर्ष भी उन्होने अपने जीवन काल में ही निकाल लिया। जिसका पहला कारण था हमारे देश में अलग–अलग राजाओं का अलग–अलग रियासतो के रूप में राज करना। इसका फायदा पहले मुगलो ने उठाया, फिर अंग्रेजो ने और फिर आजादी के बाद वामपंथियों ने, जिसका परिणाम है कि आप हम चाह कर भी अपनी संस्कृति की रक्षा नही कर सकते।

हमारे मंदिरो को तोड़कर मज्जिदें बना दी गई। शिक्षा व्यवस्था ने इतिहास को बदल दिया और हमें मुगल कालीन इतिहास पढ़ाया गया। आज हमारी हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति पर प्रश्नचिन्ह खड़ा किया गया और हम लोग भी इसे सहते गये। जब डॉ. हेडगेवार ने इन सारी जटिलताओं को देखा, समझा, और तय किया कि समाज में होने वाले विघटन को हमें समाप्त करना होगा।

हम समझ सकते है कि अति निर्धन परिवार मे जन्म लेने वाले डॉ. हेडगेवार ने 1914 में कलकत्ता मेडीकल कॉलेज से एम.बी.बी. एस. की पढ़ाई की। उनके साथ के डॉक्टरों ने उस जमाने में डॉक्टरी करके बहुत कमाई की किन्तु डॉ. हेडगेवार जी ने 1925 में 36 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की और चरित्र–निर्माण तो पहले गुरुकुल में होता था। हमारे यहाँ व्यायामशालाएं होती थी जहाँ अपनी दिनचर्या में शाम को तथा सुबह सोने के समय में से एक घंटा निकालकर व्यायाम, कसरत, फिर देशभक्ति गीत, वर्तमान पर चर्चा और प्रभु की प्रार्थना करना। इस प्रकार संस्कारी समाज का निर्माण करना जिससे समूचा समाज संस्कारी हो। यही आज संघ के रूप में स्थापित हुआ है।

संस्कार परिवार मिलन योजना की सार्थकता

डा० रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री
केन्द्रीय महिला समिति

करोना संक्रमण काल में मा.वीरेन्द्र जी की संकल्पना से संगठन की प्रारंभ हुई 'संस्कार परिवार योजना' विभाग,जिला स्तर की यात्रा से आगे बढ़ती हुई अब नगरशः कार्यक्रमों की ओर बढ़ रही है। दिल्ली प्रांत में प्रारंभ में यह कार्यक्रम online आयोजित हो रहे थे,परन्तु करोना अवसान के पश्चात् जैसे ही सामान्य जीवन पटरी पर आया , संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रमों के प्रत्सक्ष रूप से आयोजन द्वारा निरन्तर समृद्व एंव वंचित परिवार भी इससे जुड़ने लगे, क्योंकि सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए परिवारों को इस योजना की परिवारशः अपनाने की आवश्यकता भी महसूस हुई। परिवार मिलन की इस योजना की सफलता का कारण इसके विभिन्न बिन्दु रहे–मंत्रोच्चार, आसन, प्राणायाम, गीत भजन, तुलसी, गिलोय सरीखे, स्वाथ्यवर्घक पौधों का घर में रोपण तथा पर्यावरण शुद्धि हेतु नीम, बरगद, पीपल आदि वृक्षों का घर के समीप खुले में रोपण, संवर्द्धन, विदेशी (विशेषकर चीनी) वस्तुओं का बहिष्कार तथा स्थानीय व स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग। इन बिन्दुओं का परिवार में दैनिक अभ्यास बच्चों के भी शारीरिक, मानसिक विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है।

ये संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम जब निचले वर्ग खिचड़ीपुर सरीखे नगरों में आयोजित हो रहे थें,उनमें स्थानीय झुग्गी झोपड़ीवासी परिवारों की भी उपस्थिति रही। तब उन क्षेत्रों के बच्चों को शिक्षित संस्कारित करने की संकल्पना बनी जो योजना अब प्रतिभा विकास केन्द्र के माध्यम से सफल हो रही है।

लगभग 2वर्ष पूर्व समाज के निचले वर्ग के बच्चों के लिये, जो सरकारी स्कूलों में पढ़ते है, प्रतिभा विकास केन्द्र दिल्ली एन.सी.आर में सफलता प्राप्त कर देश के विभिन्न प्रांतों यथा राजस्थान, उड़ीसा, मध्यप्रदेश आदि में भी बच्चों को संस्कारित–शिक्षित करने में महती भूमिका निभा रहे हैं। अब इन बच्चों के परिवारों का भी मासिक मिलन सम्पन्न होता है तथा संगठन 1लाख परिवारों को संस्कार परिवार बनाने की योजना पर काम कर रहा है।

वर्तमान 2023–24 वर्ष में केन्द्रीय कार्यक्रम के आयोजन से पूर्व दिल्ली,एन.सी.आर में 26 जिलाशः तथा 8 नगरशः संस्कार परिवार मिजन कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए जिनमें सहभागी क्षेत्रवासियों की 100 से लेकर 350 तक उपस्थिति रही, जो निश्चय ही सुखद भविष्य की परिचायक है। यहाँ पूर्वी विभाग में सम्पन्न कुछ कार्यक्रमों कें वर्णन के साथ विभिन्न झलकियां प्रस्तुत हैंः–

संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम, भोलानाथ नगर (शाहदरा)

नगर का वार्षिकोत्सव, जो 'श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव' को समर्पित था, रविवार 7 जनवरी, 2024 को समुदाय भवन, भोलानाथ नगर में 'भजन गंगा' के रूप में प्रातः 10 बजे से 1:30 तक संपन्न हुआ। इस अवसर पर संस्था के केन्द्रीय मंत्री श्री मयंक शेखर जी ने प्रस्तावना रखी। उन्होंने बताया कि संस्था का उद्देश्य वनवासी समाज व नगरीय समाज के वंचित वर्ग में उनके शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य, स्वाभिमान व स्वावलंबन के विकास हेतु कार्य करना है। अपने नगर में केशव प्रतिभा विकास केन्द्र (सी.ए.बिल्डिंग के पीछे) विश्वास नगर, इन्हीं विषयों पर कार्यरत है।

विश्व हिन्दू परिषद् के धर्म जागरण विभाग के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री रमेश जी शर्मा ने 22 जनवरी, 2024 को श्रीरामलला प्राण प्रतिष्ठा की खुशी में मंदिरों में प्रातः 11 से 1 तक समारोह का अयोध्या जी से सीधा प्रसारण देखने, संकीर्तन, सुन्दरकाण्ड व अखंड रामायण पाठ करने हेतु व घरों में दीप प्रज्ज्वलित करने, रोशनी करने व मिठाई द्वारा दीपावली मनाने का आग्रह किया।

संस्था के केन्द्रीय संगठन प्रभारी श्री वीरेन्द्र जी ने परिवार में सनातन विचार चिंतन की आवश्यकता पर बल देते हुए संस्था के कार्य में तन–मन–धन से सहयोग करने का आह्वान किया और जानकारी दी कि इस कार्य में प्रति छात्र शिक्षण व्यय रु 5000/– प्रति वर्ष आता है, हमें एक–दो या क्षमता अनुसार अधिक छात्रों के शिक्षण व्यय का सहयोग करना चाहिए।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला कार्यवाह व संस्था के नगर संरक्षक श्री रामजी लाल जी, सह जिला कार्यवाह श्री घनश्याम जी, नगर कार्यवाह श्री विजय पाल जी, वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के शाहदरा जिला अध्यक्ष श्री सुनील जी, नगर संरक्षक श्री विजय कपूर जी का सानिध्य रहा। नगर के अधिकतर मंदिरों के प्रधान, अन्य कार्यकर्ता और पुजारियों, सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं व सहयोगी सज्जन शक्ति का भी प्रभावी संख्या में प्रतिनिधित्व रहा।

केशव प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों द्वारा आकर्षक देशभक्ति व धार्मिक गीतों पर अति सुन्दर नृत्य व योगासन का भव्य प्रदर्शन किया।

आत्मरक्षा गुण अभ्यास केन्द्र, गली नं 12, विश्वास नगर के छात्रों द्वारा श्री अयोध्या जी के निमंत्रण पर सुन्दर गीत प्रस्तुतिकरण हुआ।

भक्त शिरोमणि श्री जयनारायण अग्रवाल जी ने दिव्य झांकियों सहित आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किया। (यह नृत्य यूट्यूब के जयनारायण अग्रवाल चैनल पर उपलब्ध है)

कार्यक्रम का प्रारंभ श्रीमती पुष्पा तिवारी व डा0 अनसूया शर्मा जी ने श्री गणेश भजन व श्री राम भजन से किया। श्री सतीश मित्तल जी ने ब्रह्मनाद का अभ्यास कराया व डा अनसूया शर्मा जी ने प्राणायाम अभ्यास कराया। भक्तजनों की कुल संख्या 350 रही, जिसमें बहनों की संख्या लगभग 150 थी।

कार्यक्रम का संचालन संस्था के नगर अध्यक्ष नरेन्द्र कुमार ने किया व आर्थिक सहयोगियों का सम्मान व सभी का धन्यवाद नगर संरक्षक श्री विजय कपूर जी ने किया। अंत में सभी ने स्वादिष्ट भोजन प्रशाद ग्रहण किया।

संस्कार परिवार मिलन - इन्द्रप्रस्थ नगर

10 दिसम्बर, 2024 को वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन इन्द्रप्रस्थ नगर का वार्षिक संस्कार परिवार मिलन का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बलदेव गुप्ता, महासचिव आईपैक्स भवन एवं प्रसिद्ध उद्योगपति थे। मुख्य वक्ता माननीय श्री बजरंग बागड़ा जी, सयुक्त महामंत्री विश्व हिंदू परिषद थे। इस समारोह में सीए सूर्य प्रकाश जालान जी, सी.ए. हंसराज चुग जी, संजय गोयल जी, शिव कुमार गोयल जी, पार्षदा शशि चानना जी, पूर्व पार्षदा अपर्णा गोयल जी, सुरेश बिंदल जी,

सीनियर सिटीजन वेलफेयर के अध्यक्ष बी एम सिंघल जी, मदन मलिक, राजीव गुप्ता जी, प्रदीप गुप्ता जाली वाले, राकेश सिंगला जी आदि ने उपस्थित होकर इस कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की।

इस कार्यक्रम में प्रतिभा विकास केंद्र के बच्चों तथा महिला समिति द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। सभी बच्चों की प्रस्तुति बहुत ही सुन्दर थी।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यक्रम संयोजक सी.ए. वेद प्रकाश रुस्तगी, जतिंदर हंस, भारत भूषण गुप्ता, सीए रतन नांगलिया, अनिल कुमार गुप्ता,

शैलेंद्र मोहन, लोकेश कुमार, धर्मेंद्र गुप्ता, विनोद कत्याल, रवि मोहन गर्ग, निशी गुप्ता,शीनू रुस्तगी, अंजू गुप्ता आदि समिति बंधु भगिनी का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन में 5 या उससे अधिक संस्कार परिवार के लिए सहयोग करने वालों का सम्मान करते हुए उन्हें स्मृति चिन्ह स्वरूप एक ऑक्सीजनदायी पौधा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन अनिल कुमार गुप्ता ने किया। अन्त में सभी का धन्यवाद सी.ए. रतन नांगलिया जी ने किया।कार्यक्रम के उपरान्त सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाया।

संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम, शाहदरा-जिला

संगठन के जिला शाहदरा का वार्षिकोत्सव शनिवार, दिनाँक 06.01.24 सांय को इंद्रप्रस्थ इंजीनियरिंग कॉलेज के अटल सभागार में भव्यता के साथ मनाया गया। इसमें वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा संचालित विभिन्न प्रतिभा विकास केंद्रों के एवं संस्कार परिवारों के स्थानीय बच्चों ने योग, नृत्य नाटिका एवं रामायण के केवट, शबरी एवं सुग्रीव मिलन के प्रसंगों की मनमोहक एवं भावनात्मक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि साइट फॉर इंडस्ट्रियल एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री दिनेश मित्तल जी एवं प्रसिद्ध समाजसेवी एवं व्यवसायी श्री सुभाष अग्रवाल जी रहे। विशिष्ट अतिथियों श्री प्रवीण गुप्ता जी एवं श्री अनिल अग्रवाल जी रहे। अति विशिष्ट अतिथि में भाजपा पार्षद श्री श्रीभगवान अग्रवाल जी, श्री विनय चौधरी जी एवं श्री भूपेंद्र उपाध्याय जी ने कार्यक्रम की भव्यता को विस्तार दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध व्यवसायी श्री प्रदीप गर्ग जी ने की एवं महानगर संघचालक मक्खन लाल जी का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में समाज के विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों के

कार्यकर्ताओ का सानिध्य रहा जिसमें प्रमुखतः श्री त्रिलोचन सिंह लवली, श्री रणवीर भाटिया, श्री आर के गुप्ता, श्री वीरेंद्र जैन, श्री योगेश जैन, श्रीमती रीता सिंह जी एवं श्री जसवंत सिंह जी रहे।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के संगठन प्रभारी मा0 वीरेंद्र जी के उद्‌बोधन को दर्शकों ने आत्मसार किया एवं आज की परिस्थिति में समाज मे संस्कारों एवं जागरूकता की आवश्यकता को समझा। मा0 वीरेंद्र जी ने बताया कि जिस प्रकार त्रेता में भगवान श्रीराम ने वनवासी समाज को गले लगाया एवं उद्धार किया उसी प्रकार आज भी शहरों में रहने वाले समाज को वनवासियों एवं वंचित समाज के सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक विकास के लिए कर्तव्य बोध से प्रेरित हो कर वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का साथ दें एवं सहयोग करें।

कार्यक्रम का संचालन, सूर्य नगर के महामंत्री श्री शशांक त्रिपाठी की जी द्वारा सुंदर तरीके से किया गया.

युवा और संस्कार

दिव्यांशु पाण्डेय
संयोजक, युवा विभाग
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

**"तन में तरंग मन में उमंग, उल्लसित हर अंग अंग।
जीवन का यौवन वसंत चलता संघर्षों के संग संग।"**

युवावस्था जीवन का वसंत अर्थात् स्वर्णिम काल होता होता है। जीवन के आजन्म व्यवसाय की मूल संपदा यौवन ही है। युवावस्था में शौर्य, साहस, कुछ नया करने की तीव्र इच्छाशक्ति और बाधाओं से लड़ने की अटूट क्षमता होती है। पुष्प की कोमलता और व्रज की कठोरता का एकत्व युवावस्था में ही दृष्टिगोचर होता है।

मनोसामाजिक दृष्टि से युवावस्था जीवन का अहम पड़ाव होता है जो विभिन्न प्रकार के सांसारिक और मानसिक परिवर्तनों को लेकर आता है। यह समय, एक युवा के लिए लक्ष्य निर्धारित करने और विचारों की स्पष्टता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक व्यक्ति का देश, समाज, परिवार, मित्रों और स्वयं के प्रति कुछ न कुछ दायित्व होता है, जिसकी स्थायी भवन युवावस्था में ही निश्चित किया जाता है। भारतीय समाज में सामान्यतः 18–45 वर्ष की आयु युवावस्था मानी जाती है। व्यक्ति द्वारा समस्त महत्वपूर्ण कार्य इसी अवधि में संपादित किए जाते हैं। स्पष्ट है कि इस अवधि की श्रेष्ठता पर स्वयं के साथ साथ समाज की श्रेष्ठता भी निर्भर करती है।

संस्कार का शाब्दिक अर्थ "शुद्धीकरण" होता है। भारतीय समाज में व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को व्यवस्था प्रदान करने के लिए जिस आधार को विकसित किया गया है, उनमें संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संस्कार का अर्थ जीवन को शुद्ध, मन को पवित्र और अंतरात्मा को श्रेष्ठ बनाने हेतु अपनायी गयी कार्यपद्धति है जिसमें व्यक्ति में श्रेष्ठ गुणों का आरोपण कर उसे सर्वांगपूर्ण बनाने का भाव सन्निहित है। प्रकृति में विरोधी और हितकारी दोनों प्रकार की शक्तियाँ हैं। संस्कार का उद्देश्य विरोधी शक्तियों के दुष्प्रभाव से बचना तथा हितकारी शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करना है। संस्कार शारीरिक, आत्मिक और भौतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। युवा अपने घर–परिवार, समाज व मित्रों के सानिध्य में संस्कार अर्जित करता है, अच्छे बुरे की पहचान सीखता है। प्रत्येक व्यक्ति का परिवार, समाज और देश के लिए कुछ न कुछ दायित्व होता है। इसे निभाने के लिये गांभीर्य व परिश्रम के साथ साथ संस्कार (अच्छे गुणों) और नैतिकता की आवश्यकता होती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है "मन की असीम शक्ति और सामर्थ को पहचान कर व्यक्ति न केवल विचारवान हो सकता है, बल्कि अच्छे इंसान में भी परिवर्तित हो सकता है।" अर्थात् अच्छे संस्कार होंगे तो व्यक्ति सही–गलत की पहचान करना सीखेगा और समाज को उर्ध्वगामी बनाने में अपना योगदान देगा।

आज समाज का तेजी से विकास हो रहा है। यह विकास युवा पीढ़ी के स्वावलंबन, कार्यकुशलता और परिश्रम पर अवलंबित है। निरंतर कुछ नया सीखना और करना सफलता का मापदंड है। आज के युवा को सफलता की इस दौड़ में सिद्धहस्त और पारंगत करने के लिए माता पिता अच्छी शिक्षा, अच्छी सुख–सुविधा देकर उनमें महत्वाकांक्षाओं का आरोपण तो करते हैं किंतु संस्कारों का विशेष ध्यान नहीं देते। हमने साधनों को ही समाधान समझ लिया और साधन की पवित्रता गौण हो गई है। आज के युवा में गुणों का विकास टी.वी, मोबाइल और सोशल मीडिया के द्वारा हो रहा है जिसके कारण वह सफल तो हो जा रहा है किंतु प्रतिकूल परिस्तिथियों का सामना करने में सक्षम नहीं है। कभी कभी भटकाव भी आ जाता है जो कि समाज के लिए खतरनाक है।

अतः यह सर्वाधिक आवश्यक है कि युवा पीढ़ी को उत्तम शिक्षा के साथ–साथ उत्तम संस्कार दिए जायें ताकि श्रेष्ठ समाज और श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण हो सके। हमारा संगठन निरंतर इसी मार्ग पर अग्रसर है और उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में सतत प्रयासरत है।

X

व्यक्तित्व विकास में संस्कारों का महत्व

वीरेन्द्र कुमार सिंह
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

व्यक्तित्व शब्द व्यक्ति से बना है। व्यक्ति शब्द का मूल रूप व्यक्त है। व्यक्त अर्थात अदृश्य, अप्रकट, अकल्पनीय, अचिन्त्य तत्व का प्रकट रूप/दृश्य रुप । ब्रह्म अव्यक्त हैं, अदृश्य है, अकल्पनीय व अचिंत्य है। जड़–चेतन उसी अव्यक्त रूप का सृष्टि के प्रकट व दृश्य रुप हैं। इनमें मनुष्य सर्वश्रेष्ठ कृति है। गीता में व्यक्ति के तीन प्रकार के गुणों–सात्विक, राजसी स्वं तामसी की चर्चा है। सात्विक गुण अर्थात ज्ञानपिपासु, आनंद पसंद, समयनिष्ठ, ज्ञान का सदुपयोग, सकारात्मक सोच का व्यक्ति। राजसी गुण अर्थात सम्मान चाहने वाले परिश्रमी, कर्मयोगी, लालच से कार्य करने वाला व्यक्ति। तामसी अर्थात आलसी, क्रोधी, दीर्घसूत्री, अधिक सोने वाला व्यक्ति । ये तीनों प्रकार के गुण कमोबेश हर व्यक्ति में होते हैं। बस अंतर मात्र परिमाण व मात्रा का होता है। इनके बीच एवं संतुलन एवं सामंजस्य बनाना ही व्यक्तिमत्व विकास है। सामान्यतः लोग सुन्दर काया, आकर्षक परिधान, चमक–दमक को ही व्यक्तित्व मानने की भूल करते हैं। वस्तुतः यह चिंतन पश्चिम का है और यह संकुचित है।

भारतीय ज्ञान परम्परा व हिन्दू चिंतन में मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास अर्थात व्यक्ति का सामाजिकरण है। यह प्रक्रिया व्यक्ति के जन्म के पूर्व से आजीवन चलती है जिसे हम भारतीय परम्परा में संस्कार कहते हैं। यह विभिन्न अनुष्ठानों और क्रिया–कलापों द्वारा व्यक्ति के विकास में जीवन पर्यन्त चलता है और संस्कार की इस सातत्य प्रक्रिया से नन्हा सा समर्पण सृष्टि के लिए उपयोगी बनता है। संस्कार वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से श्रेष्ठ बनाती है। हिन्दू चिंतन में कहा गया है– यह मानव शरीर पंचकोशात्मक है। यह केवल शरीर मात्र नहीं अपितु किसी भी व्यक्ति का आशय उसके शरीर, प्राण, मन, बुद्धि और आत्मा से है। इन पाँचों कोशों के संतुलित व समग्र विकास से व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है और इस व्यक्तित्व निखारने, संवारने, सजाने की प्रक्रिया का नाम संस्कार है। गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों की षोडश श्रृंखला इसलिए है कि मनुष्य परिवार–समाज–राष्ट्र व प्राणिमात्र के लिउ योग्य बने। संस्कार का अभिप्रायः मात्र धार्मिक अनुष्ठान व कर्मकांड तथा बाह्राडंबर नहीं बल्कि यह वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को बाह्यभ्यांतरिक सौंदर्य को निखारकर इनके अंदर नैतिक मूल्यों एवं आचारण का संवर्द्धन कर अपने माता–पिता व घर के लिए दीपक तथा सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याणार्थ दिवाकर बनाता है। संस्कार हमारे बाल मन को शुद्ध, परिष्कृत एवं उन्नत करने की प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी बालक के मन, रुचि, आहार–विचार को समृद्ध कर इन्हें दोषी रहित बनाता है चरित्र का निर्माण करता है।

हमारी मान्यता है कि प्रत्येक बालक अपने जन्म से सामान्यतः अच्छे गुणों के साथ ही संसार में पदार्पण करता है। परन्तु आयु वृद्धि के साथ–साथ घर–परिवार.. समाज व काल–परिस्थिति के प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव से उनके आचार–विचार, व्यवहार तथा गुणों का विकास होता है। हर माता पिता की सहज व स्वाभाविक इच्छा होती है कि उनकी संतान श्रेष्ठ गुणों से युक्त व योग्य व्यक्ति बने तथापि वह नहीं बन पाता। यह हर अभिभावकों के लिए विचारणीय है। भारतीय ज्ञान–

परम्परा में षोडश संस्कारों की चर्चा है, इसे ध्यान में रखना तदनुसार यदि हमारा व्यावहारिक जीवन रहा तो निश्चय ही बाल मन पर श्रेष्ठ व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इन षोडश संस्कारों का संक्षिप्त परिचय हर माता–पिता को होना चाहिए।

षोडश संस्कार हैं— गर्भाधान, पुंसवन, सीमांतोपनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेधन, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशांत, समावर्तन, विवाह तथा अंत्येष्टि।

हमारे ये सोलह संस्कार मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं अपितु पूरी तरह प्रामाणिक व वैज्ञानिक अनुसंधान है जिसके माध्यम से बालक, सम्पूर्ण पंचकोशात्मक सर्वांगीण विकास संभव है पश्चिमी चिंतन में बालक का जन्म स्त्री–पुरुष के आनंद का अनचाहा परिणाम है। जबकि हमारी भारतीय ऋषि परम्परा में बालक बालिका का जन्म ईश्वर की कृपा है हम सब ईश्वर के अंश है। परमपिता परमेश्वर का अंश है, हमारी आत्मा। इस भाव से हम हर नन्हे बालक–बालिक में ईश्वर का रूप देखते है। वह ईश्वरत्व का आत्मतत्व सद्संस्कारो से पुष्पित–पल्लवित होकर बालकों को श्रेष्ठ मानव बनाता है।

संस्कार प्राप्ति के केन्द्र :– संस्कार यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो सहज व स्वाभाविक रूप से बच्चों में हस्तांतरित होती रहती है। संस्कार प्रदान करने का प्रथम केन्द्र माँ का गर्ग, गाँ की गोद, उनका स्नेह युक्त आँचल तथा पिता का प्रेम व लाड़प्यार है। बालक अपने जन्म के पूर्व से ज्ञान प्राप्त करता है। माता–पिता के दिन प्रतिदिन की गतिविधियों, उनके सकारात्मक–नकारात्मक चिंतन एवं व्यवहार का प्रभाव बालक के कोमल मन –मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालता है। नन्हा सा अबोध दिखने वाला बच्चा उनकी हर गतिविधियों को गौर से सुनता, समझता रहता है। जो वह देखता है उसकी अमिट छाप उसने चित्त पर स्थायी रूप से अंकित होते हैं। यह हर माता–पिता के लिए विचारयोग्य है। बालक धीरे–धीरे बड़ा होता है और उसका सम्पर्क परिवार के अन्य सदस्यों, घर के वातावरण–बाहांतरिक परिवेश से होता है। स्वाभविक रुप से उनका प्रभाव बालमन पर चिरस्थायी होता है। कालांतर में पास–पड़ोस, विद्यालय महाविद्यालय, कुटुम्ब–सगे संबंधियों व समाज जीवन के अन्य लोगों से बालक का सम्पर्क होता हैं। इनके सकारात्मक–नकारात्मक हर गतिविधियो का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। अतएव इन सभी रुपकिंत स्थलों–व्यक्तियों से अपेक्षा रहती है कि बालक को सकारात्मक व उत्साहवर्द्धक सीख मिलती सद्संस्कार का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र है। पाठशाला / विद्यालय का आध्यात्मिक – सांस्कृतिक परिवेश, उसकी साज–सज्जा, विधि प्रकार की शैक्षणिक, सह–शैक्षिणक गतिविधियों के साथ वहाँ अध्यापन करने वाले आचार्य की वाणी उनकी दिनचर्या, आचार–विचार–व्यवहार का गहरा प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व विभिन्न व चरित्र निर्माण के पड़ता है।

चरित्र निर्माण व संस्कार युक्त व्यक्तित्व निर्माण में तृतीय महत्वपूर्ण केन्द्र सत्संग, पूजा स्थल, मंदिर, भजन–कीर्तन आदि है। कहा गया है कि संगत से गुण होत है, संगत से गुण जाए। संत, ऋषि–मुनियों कथा–वाचकों की प्रेरक वाणी व सज्जनों की संगति बालक के संस्कार व चरित्र निर्माण का महत्वपूर्ण अंग है।

हर बालक की अपेक्षा होती है उसे स्नेह –प्रेम मिले, सम्मान मिले, प्रेरणा एपं प्रोत्साहन मिले। जिन्हें यह प्राप्त है स्वाभाविक रूप से उनके अंदर सद्संस्कार आएंगे और उत्तरोत्तर बालक का व्यक्तित्व व्यष्टि से समष्टि की और निखरता जाएगा। हर बालक देश व समाज के लिए योग्य एवं उपयोगी नागरिक बने यही अपेक्षा है।

संस्कार से परिवार और समाज में बदलाव

मनीष तिवारी
पूर्णकालिक सेवाव्रती कार्यकर्ता
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

जिस तरह से पर्वतों में हिमालय का, जलाशयों में सागर का, ज्योति पिंडों में सूर्य का जो स्थान है वही स्थान हमारे जीवन में संस्कारों का भी है। जिसके माध्यम से ही हमारे चरित्र को बल प्राप्त होता है वे संस्कार ही हैं, जिनसे विभूषित होकर व्यक्ति का मूल्य और सम्मान बढ़ता है। संस्कार का सही अर्थ होता है, संवारना यानी सही आकार प्रदान करना।

वर्तमान समय में सबसे ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता बच्चों पर ही है। बच्चे ही समाज एवं राष्ट्र का भविष्य हैं। बच्चे ही इस देश की प्राण–ऊर्जा हैं। यदि इन्हें संवारा जा सके, इन पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा सके तो निश्चित रूप से क्रमशः परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण हो सकता है। आज जन्म लेने वाले बच्चे कल भविष्य में युवा बनकर देश की बागडोर एवं अन्य जिम्मेदारियाँ सँभालते हैं। यदि उन्हें ठीक प्रकार से गढ़ा नहीं गया, उनमें सही समझ पैदा नहीं हुई, तो उनका जीवन कुंठित एवं रुग्ण हो जाएगा और फिर उनका जीवन इस देश पर एक भार होगा। एक सुसंस्कारित बच्चा ही अपने माता–पिता के नाम को उज्ज्वल एवं प्रकाशित कर सकता है।

हर माता–पिता अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के लिए धन–संपदा को एकत्रित करते हैं, उसके विकास के लिए बहुत चिंता करते हैं। लेकिन यदि माता–पिता अपने बच्चे को विरासत में अच्छे संस्कार दे सकें, तो फिर उन्हें कुछ और खास चीज देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि ऐसी संतानें न केवल अपना भविष्य सुधार लेंगी, बल्कि औरों के लिए भी साधन–सुविधाएँ जुटा लेंगी।

संतान उत्पत्ति के संदर्भ में **स्वामी विवेकानंद का कथन है कि यदि माता–पिता बिना प्रार्थना किए संतानोत्पत्ति करते हैं तो ऐसी संतान 'अनार्य' है अर्थात समाज पर भारस्वरूप है। 'आर्य' संतानें वे ही हैं, जो माता–पिता द्वारा भगवान से की गई निर्मल प्रार्थना के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं। वे ही परिवार, समाज का हित साधन कर सकता हैं।**

बालक माता–पिता के शारीरिक और मानसिक साँचे एवं ढाँचे में ढले हुए समाज एवं संस्कृति द्वारा संस्कारित मिट्टी के पुतले होते हैं। जैसे माता–पिता होंगे, वैसी ही उनकी संतानें होंगी। **इस संदर्भ में एक प्रसंग है कि जब राम जी वनवास हेतु वन गए हुए थे तब राम जी ने लक्ष्मण के चरित्र की परीक्षा लेनी चाही। उन्होंने लक्ष्मण से प्रश्न किया– "हे लक्ष्मण! सुंदर पुष्प, पके हुए फल और मदमस्त यौवन देखकर ऐसा कौन है, जिसका मन विचलित न हो जाए?" इस पर लक्ष्मण ने उत्तर दिया– "आर्यश्रेष्ठ ! जिसके पिता का आचरण सदैव से पवित्र रहा हो, जिसकी माता पतिव्रता रही हो, उनके रज–वीर्य से उत्पन्न बालकों के मन कभी चंचल नहीं हुआ करते।"**

युवा पीढ़ी को शिक्षा ही नहीं, संस्कार प्रदान एक प्रमुखता है। भौतिकवाद के विस्तार के साथ ही युवा पीढ़ी के जीवन में जो खुलापन आया है, उसने सभी सामाजिक बंधन तोड़ दिए। संस्कार, नैतिकता जैसे शब्द युवा पीढ़ी के लिये मजाक के विषय बन गए हैं।

भले ही अभिभावकों ने बच्चों को येन–केन प्रकारेण समस्त सुविधायें उपलब्ध करा दी हों, लेकिन ऐसे अभिभावक कितने हैं जो अपने बच्चों को सदाचार, सत्याचरण व धर्माचरण के संस्कार देते हैं? इन्ही संस्कारों के अभाव मे जब बच्चे बड़े होकर अभिभावकों से अलग

होकर एकल परिवार में रम जाते हैं तो बरबस ही अभिभावक स्वयं को ठगा सा महसूस करते हैं। आज पुरानी संस्कारों वाली कहानियां तो सब समाप्त हो गई, और संस्कारों को हरण करने वाली कहानियां शुरू हो गई है। इस तरह सुविधा सम्पन्न, किंतु दिशाहीन युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक परम्परा व आजादी की पृष्ठभूमि से दूर हो गई तो समाज का प्रौढ़ वर्ग भी अपनी जवाबदारी से मुँह नहीं मोड़ सकता। आज घरों में अच्छे साहित्य की जगह उपलब्ध हैं नए नए चैनलों द्वारा दिया गया फूहड़ मनोरंजन, जिसने समाज में विकृति दी है, ने विलास व हिंसा को बढ़ाया है। बच्चों के जीवन में संस्कारहीनता का मीठा जहर घोल दिया है।

पारिवारिक मूल्यों का भावार्थ है परिवार में रहने के नियम। भारतीय संस्कृति में परिवार का अर्थ बहुत व्यापक है। इसमें माता पिता ही नहीं, बल्कि चाचा–चाची, दादा–दादी, नाना–नानी, मौसी–मौसा, बुआ–फूफा आदि कई सारे रिश्ते होते है। इन रिश्तों को भावपूर्वक एक धागे में पिरोकर रखना ही परिवार का कर्त्तव्य होता है। माता–पिता का आदर, वृद्धजनों का सम्मान, कुटुंब में स्नेह, भाई–भाई में प्यार, अच्छी शिक्षा, सेवाभाव का संचरण इत्यादि ही पारिवारिक मूल्य कहलाते हैं। इसलिए क्यूंकि आज बहुत ही तेजी से इन मूल्यों का हास होता जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति समाज पर इस कदर हावी होती जा रही है कि ये चिंता का विषय बन गया है।

हम जितने आधुनिक हो रहे हैं, हमारे नैतिक मूल्य उतने ही गिरते जा रहे हैं। रिश्तों में व्यावहारिकता की जो लहर चली है उसने कई नातों को धराशायी कर दिया है। अब रिश्ते दिलों के नहीं, सिर्फ लाभ–हानि के रह गए हैं। हम जितने प्रोफेशनल हुए हैं, परिवारों में दूरी बढ़ा है। हमारी इस व्यवसायी सोच की कीमत संभवतः परिवारों ने भी चुकाई है।

समाज में संस्कार द्वारा व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और मूल्यों से जुड़ता और जोड़ता है और अपनी पहचान, गौरव और अपनेपन की भावना विकसित करने में मदद करता है। संस्कार विविधता और सांस्कृतिक समझ के प्रति सराहना को बढ़ावा देता है, एक सर्वांगीण और समावेशी विश्वदृष्टि में योगदान देता है।

संस्कारयुक्त व्यक्ति सहानुभूति, करुणा, कृतज्ञता और क्षमा जैसे मूल्यों पर जोर देकर भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देता है, और व्यक्तियों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता, लचीलापन और अपनी भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है।

संस्कारित व्यक्ति सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए औरों को भी प्रोत्साहित करता है। वह सामुदायिक सहभागिता, सामाजिक न्याय और समाज में सकारात्मक योगदान के महत्व पर जोर देता है। निश्चय ही संस्कार सहानुभूति की भावना और दुनिया में बदलाव लाने की प्रतिबद्धता का पोषण करता है।

शिक्षा और संस्कार के संयोजन से व्यक्ति समग्र विकास का अनुभव करता है जिसमें बौद्धिक विकास, व्यक्तिगत विकास, नैतिक मूल्य, सांस्कृतिक समझ और सामाजिक जिम्मेदारी शामिल होती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण व्यक्तियों को स्वयं, अपने समुदाय और समग्र रूप से समाज में सकारात्मक योगदान देने में सक्षम व्यक्ति बनने में मदद करता है।

हम **वसुधैव कुटुंबकम्** की जिस भावना की बात करते हैं, उस भावना के अनुसार ही पहले के लोग अपना जीवन व्यतीत किया करते थे। इसी कार्य को आज **वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन की योजना प्रतिभा विकास केन्द्र** के द्वारा किया जा रहा है। यह शिक्षा के साथ संस्कार देने का कार्य है जिसमें बच्चों के साथ –साथ परिवारों को भी संस्कारित बनाना है ताकि विश्व में फिर से राम राज्य स्थापित हों।

भारत माता की जय ! जय श्री राम !

संस्कार द्वारा बच्चों को चरित्रवान बनाना

महक
आचार्या
ज्ञानधारा प्रतिभा विकास केन्द्र
जिला – नंद नगरी

शिक्षा और संस्कार एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। शिक्षा मनुष्य के जीवन का अनमोल उपहार है जो व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल देती है, और संस्कार जीवन का सार है जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता है। जब मनुष्य में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास होगा तभी वह परिवार, समाज और देश के विकास की ओर अग्रसर होगा। शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि चारित्रिक ज्ञान भी होता है जो आज के इस भागदौड़ वाली जिंदगी में हम भूल चुके हैं। हम अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में दाखिला दिलाकर संतुष्ट हो जातें हैं परन्तु ये हमारी लापरवाही है जो हमारे बच्चों को गुमराह कर रही है। आज के अधिकांश बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर संभ्रांत तो हैं पर विवेकशील नहीं।

समाज के बदलाव के लिए बच्चों में अच्छे गुणों की आवश्यकता होती है और उसकी नींव हमें हमारे बच्चों के बाल्यावस्था में ही रखनी पड़ती है। बच्चों को तीन गुण आत्मसात करवाने की आवश्यकता है ज्ञान, कर्म और श्रद्धा। इन्हीं तीन गुणों से उनके जीवन में बदलाव आएगा और वे परिवार, समाज, और देश सेवा में आगे बढ़ेंगे। आज जो राष्ट्रव्यापी अनैतिकवाद का प्रदूषण हमारे समाज और देश को दूषित कर रहा है उसका कारण सिर्फ बच्चों में संस्कार और शिक्षा का अभाव है जिसका दोषी हम स्वयं हैं। हम अपने झूठे दिखावे की प्रवृति के कारण अपने भारतीय अमूल्य संस्कारों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता का आँख मूंद कर अनुसरण करना ही हमें और हमारे बच्चों को पथभ्रष्ट कर रहा है।

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य सुंदर चरित्र है। शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का पूर्ण और संतुलित विकास करती है। बच्चों में सांसारिक और आध्यात्मिक शिक्षा–दोनों की नितांत आवश्यता है क्योंकि शिक्षा हमें जीविका देती है और संस्कार जीवन को मूल्यवान बनाते है। शिक्षा में ही संस्कार का समावेश है। अगर हम अपने बच्चों में भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्पराएँ, भाईचारा, एकता आदि का बीजारोपण करतें हैं तो उसमें खुद व खुद के संस्कार आ जाते हैं जिसकी जिम्मेदारी माता–पिता, परिवार और गुरु की होती है।

बचपन में परिवार के बाद विशेष रूप से बच्चों को संस्कार विद्यालय में सिखाए जाते हैं। अतः गुरु का कर्तव्य बनता है कि वे कक्षा तथा खेल के मैदान में ऐसा वातावरण उपस्थित करें जिससे बच्चों

में शिक्षा और संस्कार दोनों का विकास हो। विद्यालय स्तर पर ऐसी गतिविधि का आयोजन होना चाहिए जिससे बच्चों में अनुशासन, आत्मसंयम, उत्तरदायित्व, आज्ञाकारिता विनयशीलता, सहानुभूति, सहयोग आदि गुणों का विकास हो सके। अधिकांशतः सरकारी स्कूलों में आर्थिक कमजोर वर्ग के बच्चे पढ़ने आते हैं जिन्हें हम मजदूर भी कहते हैं। उनके माता–पिता उतने संभ्रांत नहीं होते जिसके कारण वे अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन कर सके। इसलिए सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। बच्चे देश के भविष्य हैं इन्हें कुशल नागरिक बनाना हमारा परम कर्तव्य है।

बच्चे बचपन से ही कुछ संस्कार जरूर सीखेंगे। जैसे सदा सत्य बोलें, दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहें , माता–पिता, शिक्षक और बड़ों का सम्मान करें, ईश्वर पर विश्वास रखें, सहनशील बनें, कर्तव्यनिष्ठ बनें, सबों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें इत्यादि।

हम जैसे संस्कार अपने बच्चों में देखना चाहते है। वैसे संस्कार बच्चो को देने के लिए हमें स्वयं संस्कारवान बनना होगा। क्योंकि बच्चे उन बातों को जल्दी से ग्रहण करते हैं, जिन्हें परिवार में वे प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, बजाय उनके जो हम उन्हें करने को कहते है। **इसलिए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के द्वारा प्रतिभा विकास केन्द्र में बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार की भी शिक्षा देने का भी कार्य कर रहे है।** और बच्चों के परिवारों के लिए संस्कार परिवार मिलन माह में आयोजित किया जाता है। जिसके द्वारा बच्चों के साथ–साथ परिवारों में संस्कारित हों।

शिक्षा अगर स्तम्भ है, तो नींव है संस्कार।
सद्‌गुण सुख की खान है, जिस पर टिका संसार।।

जय श्री राम!

सनातन की जीत - मंदिर निर्माण

ममता तिवारी
आचार्या
जीजाबाई प्रतिभा विकास केन्द्र
जिला – भजनपुरा

एक दिन हिंदू का परचम
उस अंबर पर लहराया था।
जिस दिन बदला लिया गया था,
हिंदू के बलिदानों का।
हिंदू के रखवालों ने
जिस दिन ताकत दिखलायी थी।
योगी मोदी ने मिलकर
उस दिन भगवा लहराया था।
रंग–भंग हो गया था उस दिन,
विद्रोहियों की मेहमानी का।
जिस दिन से सत्ता का कारोबार
हिंदू ने संभाला था।
बाबर ने जब रामलला का
मंदिर तोड़ गिराया था।
उस दिन गला घुट गया था,
हिंदू के स्वाभिमानों का।
फिर हिंदुओं ने मिलकर,
अपना आक्रोश दिखाया था।

हुई सनातन की जीत,
जिस दिन हिंदू ने आवाज उठायी थी।
बिना खौफ के न्यायपालिका ने
उस दिन न्याय सुनाया था।
कई सौ साल वर्षों का फैसला,
जब हिंदू के पक्ष में आया था।
पड़ी राम मंदिर की नींव उस दिन,
घर–घर भगवा लहराया था।
विशाल मंदिर बन खड़ा हुआ,
रामलला के भक्तों का।
हुई सनातन की जीत उसी दिन,
जिस दिन हिंदू का परचम
उस अंबर पर लहराया था।

सात्विक दान

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

हमारी सनातन संस्कृति के समस्त आधारभूत ग्रंथों में दान की महिमा का व्यापक वर्णन किया गया है। महान राष्ट्रवादी राजनीतिक चिन्तक दीनदयाल उपाध्याय जी ने अर्थ की गति पर अपनी पुस्तक में लिखा है,''अर्थ का अभाव अर्थात गरीबी मनुष्य के लिये अभिशाप है , वह पशुवत जीवन जीने को विवश रहता है ,तो दूसरी ओर अर्थ का प्रभाव अर्थात धन की अधिकता मनुष्य को उच्छृंखल, स्वेच्छचारी ,अत्याचारी ,अहंकारी बना सकता है। वह राक्षस बन जाता है ,इसमें सामंजस्य के लिये दान की सर्वाधिक महिमा बतायी गयी है। दान को धर्म का अनिवार्य अंग माना गया है,पर दान कैसा हो– श्रीकृष्ण ने गीता के सत्रहवें अध्याय में तामसिक दान को स्पष्ट करते हुए कहा है कि अनुचित स्थान पर , अनुचित समय पर , अज्ञानता के साथ, अपमान करके अयोग्य व्यक्ति को दिया गया दान 'तामसिक' कहा जाता है।

मनुष्य के अंतःकरण में जब तमोगुण का प्रभाव बढ़ने पर उसकी बुद्वि में अज्ञानता का संचार हो जाता है तो विवेक की क्षमता क्षीण हो जाती है। ऐसी अवस्था में दिया गया दान तामसिक कहलाता है। दूसरे व्यक्ति को अपमानित करके दिया गया दान पूर्ण रूप से व्यर्थ माना गया है। जो दान के योग्य ही नहीं है उस व्यक्ति को दान स्वरूप जो भी वस्तु, धन इत्यादि दिया जाता है उसका वह दुरूपयोग करता है, जिसका दुष्प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। ऐसा दानदाता एवं जिस व्यक्ति को दिया गया है दोनों को अघोगति की ओर ले जाता है। हमारे ऋषियों का चिंतन है कि जिस प्रकार बंजर भूमि में बोया गया बीज फलीभूत नहीं होता, इसी तरह अयोग्य व्यक्ति को अज्ञानतावश दिया गया दान कभी भी फलीभूत नहीं होता। वह व्यर्थ ही जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति दान के महत्व से परिचित है, परंतु दान किस भावना से देना चाहिए,इससे अधिकतर लोग अपरिचित ही हैं। आज केवल अपने सामाजिक वैभव, पद, प्रतिष्ठा का प्रभाव दिखाने के लिए ही दान किया जाता है। दान–पुण्य करते समय दिखावे की प्रवृति से हमारे अंतर्मन में अहंकार का जन्म होता है जिससे हमारा दान तामसिकता की श्रेणी मे चला जाता है। हाथों की महिमा दान–पुण्य करने में है, परंतु तामसिक दान से मनुष्य के अंतर्मन में तामसिक वृत्तियों का ही प्रादुर्भाव होता है। तामसिक दान मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति में बाधक माना गया है। इसलिये दान समझकर जानकर ही देना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के सत्रहवें अध्याय के बीसवें श्लोक में सात्विक दान का महत्व बताया है,जो हम सबके लिए अनुकरणीय है।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतम्।।

अर्थ– जो दान कर्तव्य समझकर, किसी प्रत्युपकार की आशा के बिना, समुचित काल तथा स्थान में और योग्य व्यक्ति को दिया जाता है,वह सात्विक माना जाता है।

स्वामी विवेकानंद का दरिद्र नारायण विचार व प्रतिभा विकास केन्द्र

सिद्धार्थ गुप्ता
दक्षिणी विभाग संयोजक,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

स्वामी विवेकानंद हम भारतीयों के लिए एक आदर्श हैं। उन्होंने कहा " भारत के राष्ट्रीय आदर्श सेवा और त्याग हैं। और यदि मनुष्य ईश्वर को पाना चाहता है तो मनुष्य की सेवा करे।'' इसी विचार को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने 'दरिद्र नारायण सिद्धांत' का प्रतिपादन किया। स्वामी विवेकानंद जी के इस सिद्धांत अनुसार उन्होंने गरीबों व निःशक्तजनों की सेवा को ईश्वर की सेवा व धार्मिक पुण्य के कार्य समान महत्वपूर्ण माना है। उनका दृष्टिकोण यह था कि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का रूप होता है और हमें सभी में दिव्यता को समझ कर सहानुभूति और सेवा की भावना बनाए रखनी चाहिए।

स्वामी जी के अनुसार गरीबी हर समस्या की जड़ है। इसे राष्ट्र से दूर करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। उनके कुछ पत्रों के अनुसार सशक्तिकरण गरीबों तक पहुंचना चाहिए। दरिद्र नारायण का यह सिद्धांत समाज के गरीब, निशक्त तथा हाशिये पर पड़े लोगों के दुख निवारण का प्रयास हैं यह निः स्वार्थ भाव से जरूरतमंद लोगों की सेवा कार्य को प्रेरित करता है। स्वामी जी ने सेवा कार्य में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है ।

इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन कमजोर वर्ग के बच्चो के लिए प्रतिभा विकास केन्द्र चलाता है। इन केन्द्रों में बच्चों को शिक्षा, संस्कार व योगासन के साथ उनकी प्रतिभा को निखारने एवं विकसित करने का कार्य किया जाता है। जिससे वे बच्चे आत्मनिर्भर बने व अपने परिवार, समाज व राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें। स्वामी जी ने देश भ्रमण के क्रम में समाज के गरीब व अभावजन्य लोगों की पीड़ा को अनुभव किया और उनकी सेवा को सर्वाधिक महत्त्व दिया।

वर्तमान में जब सामाजिक असमानता पहले की तुलना में काफी बढ़ी है। सामाजिक न्याय स्थापित करने में स्वामी विवेकानंद के इस सिद्धांत का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। 'एकमात्र ईश्वर जिसका अस्तित्व है, एकमात्र ईश्वर जिस पर मैं विश्वास करता हूँ वह दीन–हीन व दुखी लोगों में निवास करता है और इनकी सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है।' स्वामी जी का यह कथन वर्तमान उपभोक्तावादी व व्यक्तिवादी युग में मानवता के नैतिक कर्त्तव्यों के प्रति पथ–प्रदर्शक के समान है।

स्वामी जी के इस सिद्धांत का महत्त्व इस बात में भी है कि इससे प्रेरणा प्राप्त कर कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय एनजीओ (NGO) व अन्य संगठन निःस्वार्थ भाव से गरीब व लाचार लोगों के कल्याण से जुड़े हुए हैं।

स्वामी जी के 'दरिद्र नारायण' सिद्धांत का महत्त्व परवर्ती काल के कई महान समाज सेवक व नैतिक विचारकों ने भी स्वीकारा। इनमें हम महात्मा गांधी व मदर टेरेसा का नाम प्रमुखता से ले सकते हैं।

प्रकृति की धरोहर है

प्रकृति की धरोहर है,
और प्रभु का है ये वरदान,
हवा,पानी,पेड़ सब मिले विरासत में,
पर मूल्य ना समझ पाया इनका इन्सान।
वनों की नित्य हो रही कटाई,
आक्सीजन की जो करते हैं निस्वार्थ सप्लाई।
आबादी के साथ बढ़ रही
इंसान की जरूरते लगातार ,
उद्योग,इंडस्ट्री,इंजन,बस बढ़ रहे वायुयान।
वायुमंडल में बढ़ रहा अंसुतलन,
खतरे में पड़ रहा मानव का जीवन धन।
देशों में लग रही हथियारों की होड़ है ,
परमाणु बम का हो रहा परीक्षण,
सर्वोतम की दौड़ है ।
औद्यौगिक लाभों के लिये
प्रकृति का कर रहे दोहन और विनाश,
दमा, निमोनिया, कैसर जैसी
महामारी का हो रहा आगास।
अंसुतलित हो रही प्रकृति ना शुद्ध वायु ,
ना जल ना खाद्य ना मिल रही शान्ति।
सदी,गर्मी,सूखा,बाढ़ का चक्र हो रहा प्रभावित,
अत्यधिक बाढ़ तो कहीं अत्यधिक सूखा,
अस्त–व्यस्त जिंदगी,मन व्यथित –व्यथित।
पेड़ लगाऐं जगह–जगह हम,
कारखानों को कर दें आबादी से दूर,
आने वाली पीढ़ियों को,
तभी,मिल पाएगी जिंदगी,
स्वास्थ्य से भरपूर।

शिक्षा

श्रीमती अल्का अग्रवाल
एस.एम.सी. ग्लोबल सिक्योरिटीज

शिक्षा ऐसा सच्चा मित्र,
सुख–दुख में, कभी ना छोड़े साथ,
शिक्षा से मनुष्य जीवन के,
दूर होते सभी अंधकार।
शिक्षित व्यक्ति के होते, सभी कार्य आसान,
शिक्षा से होता है,सही और गलत का ज्ञान।
जीवन में हो सकते उन्नत,
यदि शिक्षा वाला गहना हो ,
सेनापति है शिक्षा और बुद्धि जैसी सेना हो।
अशिक्षा का दर्द वही जानता,
जिसको शिक्षा ना मिल पाती है ,
शिक्षक है अनिवार्य,
नहीं तो ज्ञान की ज्योत नही जल पाती है।
शिक्षक अगर मिल जाए सच्चा, तो जीवन रूपी
नाव की पतवार,
भयावह लहरों मे भी,
लग जाती है आसानी से पार।
शिक्षक ही देते हमें
ज्ञान और उचित मार्गदर्शन भी,
जिनकी बदौलत पा लेते
ऊंचाइयाँ और सफल जीवन भी।
सपने हम जो देखते,
नई बुलदियाँ छूने के,
शिक्षक ही हमें योग्य करते,
हकीकत का रंग वो भरते।
शिक्षक होते हैं चरित्र और नैतिक
शक्ति के दाता,
राष्ट्रभक्ति और संस्कृति का
ज्ञान कराने वाले राष्ट्र –निर्माता।

दान की महिमा

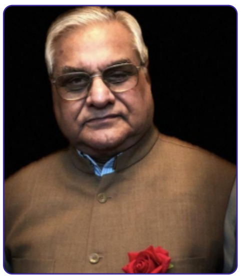

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

भगवान ने हमें जीवन दिया है, हम भी औरो को जीवन दें। महादेव हमे दें, हम देव बनकर आगे दें। यही आदान–प्रदान हो तो 'दान' कहलाता है।

धन की चार गति हैं:– भोग, निवेश, दान अथवा विनाश। अतः हम अपनी धर्मपूर्वक कमाई से अपनी कामनाओं को पूर्ति करें, आवश्यकतानुसार निवेश करे, एवं दान द्वारा अपने भविष्य में निवेश करें, अन्यथा वह निरर्थक हो जायगा। इसी को धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष के रूप मे शास्त्रो मे चार पुरुषार्थ बताये गये हैं।

हम सभी ईश्वर की संतान हैं, हर पिता की इच्छा यही होती है कि उसकी सभी संतानें सुखी रहें। हमारा भी कर्तव्य है कि उसकी निर्मल संतानों के अभाव की पूर्ति हम भावपूर्वक किये दान से करें।

हमारे दान से ही समाज में समरसता आयेगी, हमारी लक्ष्मी भी सुलक्ष्मी बन जाएगी, संसार में ईर्ष्या–द्वेष समाप्त होकर परस्पर स्नेह व सम्मान की वृद्धि होगी।

शास्त्रों के आदेश "श्रृद्धया देयम्" पर चलते हुए, सुपात्र को दान देकर हम भी ईश्वर की भक्ति करते हुए उसकी कृपा के पात्र बनें। हमारी अपनी भी कीमत साधनों के जोड़ने से घटती व बाँटने से बढ़ती है। Art of Living तो हमें हम जानते ही हैं, Art of giving सीखें, इससे क्या सुख मिलता है देखें।

हमारी अपनी एक योग्यता है, उसी के अनुसार ही हमारी अर्थोपार्जन की क्षमता होती है। पुरूषार्थ की मात्रा परिणाम में वृद्धि कर देती है। कभी–कभी हमें ऐसा भी स्वयं आभास होने लगता है कि हमें आशा से कुछ अधिक ईश्वर की कृपा प्राप्त हो रही है।

ऐसी अवस्था में यदि हम स्वयं को श्रेय देने लगते हैं तो बंधुओ, हमारे अहंकार में निरर्थक वृद्धि होने लगती है जो अन्ततः अनिष्टकारी भी सिद्ध हो सकती है। न्यायपूर्ण तो यह है कि हम चिंतन करें कि ईश्वर ने हम पर अधिक विश्वास करना आरंभ कर दिया है, और वह हमसे यह अपेक्षा कर रहा है कि हम अपनी अतिरिक्त आमदनी को ईश्वर की वंचित संतानों की सेवा में अर्पित कर उनके विश्वास पर खरे उतरें। यही सेवा भावना ही तो दान प्रवृत्ति को जन्म देती है।

शास्त्रों व वेदों में स्पष्ट आदेश है :–

"शत हस्त्र समाहर, सहस्त्र हस्त संकिरः" अर्थात हम सौ हाथों से कमाएं और हजार हाथों से उसका वितरण करें।

ऐसा न करने पर पुनः शास्त्र हमें चेतावनी इन शब्दों में देता है :– **"केवलाघो भवति केवलादि"**

अर्थात् जो एकला ही खाता है वह पाप खाता है। इसीलिये तो कहा जाता है कि ''बाँट कर खाओं तो वह ''प्रसाद'' बन जाता है अन्यथा वह हमारा अकेला उपभोग ''विषाद'' बन जाता है

''पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम,''
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानों काम।''

इसीलिये यही अभीष्ट है कि हम सदैव ही ईश्वर से निम्न प्रार्थना करें :—

''साईं इतना दीजिये, जागे कुटुंब समाये,'
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।''

हम क्यों दें ? :—

- समाज में धनपति वही है जो धन का स्वामी होकर निर्धन के अभाव की पूर्ति कर, विषमता की खाई को पाटने का प्रयास करे।
- ऐसा करने से हम ईर्ष्या के पात्र न बनकर सम्मान के पात्र बनते हैं।
- हमारी लक्ष्मी को 'सुलक्ष्मी' बनाने का यही एक मात्र उपाय है। फिर वह हमारे स्वास्थ्य व कल्याण में वृद्धि का हेतु बनती है। बहुतो की दुआएं हमें अनिष्ट से बचाती हैं।
- वेदो में एक मंत्र इसको स्पष्ट करता है :—

''व्रतेन दीक्षाम आप्नोति,
दीक्षयां आप्नोति दक्षिणाम।
दक्षिणा श्रद्धाम आप्नोति, श्रद्धात सत्यं आप्यते।।

अर्थात व्रत से दीक्षा, दक्षिणा, श्रद्धा व प्रभु की प्राप्ति होती है। अतः

''श्रद्धया देयम, अश्रद्धया देयम,
श्रिया देयम, हिया देयम,
भिया देयम, संविदा देयम।।

अर्थात् श्रद्धा से दो श्रद्धा न भी हो तो अश्रद्धा से दो, समाज की शर्म से दो, भय से दो, कुछ भी न हो तो ईश्वर की आज्ञा से दान दो, अन्यथा दंड के भागी होने को तैयार रहो।

किसे दो ?:—

दान हमें विवेकपूर्वक केवल सुपात्र ही को देना चाहिये जिसमें पारदर्शिता हो।

दान में हमारी भावना स्वयं के अहंकार की पुष्टि न होकर वंचित को कल्याणकारी ही की भावना हो।

we should not give charity
for keeping the poor poor.
But for empowering those poor.
As may create extra ordinary change
in those ordinary lives.

निष्कर्ष :— बंधुओं! हम संसार के प्रत्येक व्यक्ति के अभाव की पूर्ति तो नहीं कर सकते, परन्तु निश्चय ही हम किसी न किसी की सहायता तो अवश्य कर सकते है।

अतः हम दान वहीं पर दें जहां हमारी पवित्र गाढ़ी कमाई हमारी पवित्र भावना से जुड़कर सौ गुनी उपयोगी हो सके।

भक्ति शब्द **''भज धातु''** से बना है जिसका अर्थ ही है **''सेवा''**। अतः हम अपने साधनों को विभक्त करके ही ईश्वर की दुर्बल संतानों की सेवा कर ईश्वर भक्ति के पुण्य के भागी बनें।

x

राम आएंगे, राम आएंगे

विमला रस्तोगी
वरिष्ठ साहित्कार
'आयाम',127,गगन विहार, दिल्ली

हम अँसुअन अंगन धुलाएंगे,

राम आएंगे।

हम घर और द्वार सजायेंगे ,

राम आएंगे।

मन भरा हुआ अनुरागों से,

और प्रभू राम के भावों से।

सब भाव व्यक्त हो जायेंगे,

राम आएंगे।

सदियों से आँखे तकती थीं,

प्रभू के मंदिर को तरसती थी,

अब मंदिर में दर्शन पाएंगे,

राम आएंगे।

अब बना राममय जग सारा,

नयनाभिराम मंदिर प्यारा।

मंदिर की भव्यता गाएंगे,

राम आएंगे।

दुलहन सी सजी है राम नगरी,

छल–छल छलकी सरजू गगरी,

खग, विहग सभी मिल

गाएंगे, राम आएंगे,

हम फिर से दिवाली

मनाएंगे, राम आएंगे

हम पलक पाँवड़े बिछाएँगे

राम आएंगे।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का विवरण

- मंदिर पारंपरिक नागर शैली में निर्मित मंदिर।
- मंदिर की लम्बाई (पूर्व–पश्चिम) 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट एवं ऊँचाई 161 फीट

तीन मंजिला मंदिर, प्रत्येक मंजिल की ऊँचाई 20 फीट, कुल 392 खम्भे, 44 दरवाजे ।

भूतल गर्भगृह–भगवान श्री राम (श्री रामलला) के बाल स्वरूप की प्रतिमा, प्रथम तल गर्भगृह– श्री राम दरबार।

कुल पाँच मंडप–नृत्यमंडप, रंग मंडप, गूढ़ मंडप (सभा मण्डप), प्रार्थना मंडप, कीर्तन मंडप।

खम्भे, दीवारों में देवी–देवता तथा देवांगनाओं की मूर्तियाँ ।

प्रवेश पूर्व से, 32 सीढ़ियाँ (ऊँचाई 16.5 फीट) चढ़कर सिंहद्वार से होगा।

दिव्यांगजन तथा वृद्धों के लिए रैम्प एवं लिफ्ट की व्यवस्था ।

चारों ओर आयताकार परकोटा (प्राकार) लम्बाई 732 मीटर, चौड़ाई 4.25 मीटर, परकोटा के चार कोनों पर चार मंदिर–भगवान सूर्य, शंकर, गणपति, देवी भगवती, परकोटे की दक्षिणी भुजा में हनुमान एवं उत्तरी भुजा में अन्नपूर्णा माता का मंदिर ।

मंदिर के पास पौराणिक सीता कूप।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर परिसर में प्रस्तावित अन्य मंदिर–महर्षि वाल्मिकी, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज गुहा, माता सबरी और देवी अहिल्या।

श्री परशुराम प्रतिभा विकास केन्द्र,
कंझावला

प्रतिभा विकास केन्द्र,
असम

प्रतिभा विकास केन्द्र,
इन्दौर

प्रतिभा विकास केन्द्र,
धनबाद

प्रतिभा विकास केन्द्र,
बासवाड़ा

जीजाबाई प्रतिभा विकास केन्द्र,
ब्रह्मपुरी